Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत् उवाच

तितिक्खं परमं णच्चा।
तितिक्षा मोक्ष का परम साधन है।

❋❋❋

परिग्गहे णिविट्ठाणं,
वेरं तेसिं पवड्ढई।
जो परिग्रह के अर्जन, संरक्षण और भोग में रत हैं, उनका वैर बढ़ता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 33 • 22 - 28 मई, 2023 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 20-05-2023 • पेज : 16 • ₹ 10

सही सोच व सदाचरण से जीवन का कल्याण करें : आचार्यश्री महाश्रमण

वलसाड़, गुजरात १५ मई, २०२३

जिनशासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ वलसाड़ पधारे। शांतिदूत ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में साधुओं की पर्युपासना का अपना महत्त्व है। सत्यमेव का महत्त्व है। कारण साधु के पास ज्ञान चेतना है, निर्मलता है। सलक्ष्य निर्मलता के पास रहने से पास रहने वाले में कुछ निर्मलता का संचार हो सकता है।

साधु तो तीर्थ के समान होते हैं। तीर्थंकर तो तीर्थ की स्थापना करने वाले एवं प्रवचन करने वाले होते हैं। जैन धर्म में चार तीर्थ बताए गए हैं–साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका। तीर्थंकर तो स्वयं तारण-तरण होते हैं।

शास्त्र में साधु की पर्युपासना करने के दस लाभ बताए गए हैं। साधु तो त्याग मूर्ति होते हैं। उनका मुख देखने मात्र से पाप झड़ सकते हैं। साधु से सत्संग श्रवण को मिलता है। सुनकर हम ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। ज्ञान से विज्ञान–विशेष ज्ञान प्राप्त होता है। हेय-गेय-उपादेय को जानकर हेय का प्रत्याख्यान करता है। प्रत्याख्यान से संयम, संयम से संवर, तप, कर्म निर्जरा और योग निरोध की स्थिति पाकर मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

संतो की संगत ओर प्रभु की वाणी सुन लेना अच्छी बात हो सकती है। भगवद् वाणी श्रवण अच्छा है। साधु हमेशा न मिले तो सज्जनों-अच्छे लोगों की संगति करना चाहिए। धार्मिक साहित्य पढ़ने से सत्-साहित्य की संगत हो जाती है। अच्छा बोलें, अच्छा सुनें, अच्छा देखें और अच्छा ही सोचें तो हमारी चेतना अच्छी हो सकती है। हमारे भीतर अच्छी चीजें जानी चाहिए।

मन में मंगलभावना रखें। भारत में संत लोग साधना करने वाले हैं। धरती पर ऋषियों का होना अच्छी बात है। संतों के चरण धरती पर पड़ते हैं तो धरती धन्य हो जाती है। संतों के प्रवचन से अच्छी बात सुन सकते हैं। संतों की वाणी, गुरु वाणी कल्याणी है, उसका श्रवण किया जाए। फिर जीवन में, आचरण में लाने का प्रयास हो।

जैसे कीचड़ में पड़े हीरे को भी आदमी उठा लेता है, तो सच्ची-अच्छी बात कहीं से मिले ग्रहण कर लेनी चाहिए। बलसाड़ में खूब धार्मिक भावना रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि व्यक्ति हर समस्या का जिम्मेदार बनता है। टेक्नोलॉजी युग ने आदमी को समस्या से भर दिया है। इन सब समस्याओं से आदमी सम्यक् ज्ञान और दर्शन से समाधान ढूँढ़ लेता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में सरस्वती इंटर नेशनल स्कूल के चेयरमैन गिरीश पंड्या, तेरापंथ महिला मंडल, तेयुप अध्यक्ष आनंद दक, स्थानीय सभाध्यक्ष श्रीचंद बोल्या, स्थानकवासी समाज से प्रदीप कोठारी ने अपने अपनी-अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त की। तेरापंथ समाज द्वारा समूह गीत प्रस्तुत किया गया। कन्या मंडल द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई। ज्ञानशाला द्वारा छः द्रव्यों पर सुंदर प्रस्तुति हुई। व्यवस्था समिति एवं अणुव्रत समिति द्वारा विद्यालय परिवार का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीवन में समस्याओं से घबराएँ नहीं : आचार्यश्री महाश्रमण

डुंगरी, गुजरात १४ मई, २०२३

मर्यादा पुरुषोत्तम आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी अणुव्रत यात्रा के साथ डुंगरी पधारे। परम पावन आचार्यश्री ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में दुःख भी है। जन्म, बुढ़ापा, रोग और मृत्यु दुःख है। पुण्य कर्म के योग से दुनिया में भौतिक अनुकूल संवेदन प्राप्त हो जाते हैं। पाप कर्म के योग से भौतिक दुःख और भीतर के दुःख भी मिल सकते हैं।

आठ कर्मों में पाप तो सारे ही हैं, पर उनमें चार पुण्य भी होते हैं। घाती कर्म चारों पाप हैं, आत्म गुणों को नष्ट करने वाले हैं। शेष चार कर्म अघाती कर्म हैं, जो भौतिक सुख-दुःख से संबंधित होते हैं। ये चार कर्म मूल आत्म-गुणों की घात करने वाले नहीं हैं। गृहस्थ जीवन में अनेक बाह्य दुःख व समस्याएँ आ जाती हैं। अर्थ का अभाव भी एक समस्या है, तो अर्थ का प्रभाव भी समस्या बन सकती है।

प्राणी दुखों से भय खाते हैं। दुःख से मुक्त होने के लिए अपने आसपास निग्रह संयम करो। समस्या और दुःख एक नहीं है। बाहर की समस्या होने पर भी आदमी की तपस्या ठीक है तो समस्या अप्रभावी हो सकती है। मन में शांति रहे। आत्म-निग्रह जिसने कर लिया है तो समस्या उसके सामने आ तो सकती है, पर भीतर तक नहीं पहुँच सकती। चित्त को प्रभावित नहीं कर सकती। आत्म निग्रह रेखा लक्ष्मण रेखा हो सकती है।

आत्म-निग्रह का मितावग्रह बन जाता है, तो समस्या बाहर रह सकती हैं, पर वह मितावग्रह में प्रवेश नहीं कर सकती। प्रेक्षाध्यान से हमारा आत्म-निग्रह सिद्ध हो सकता है। रहो भीतर, जीयो बाहर। जीवन में समस्याएँ आती भी हैं और चली भी जाती हैं। समता-शांति रखें।

अगर राग-द्वेष को नहीं जीता तो जंगल में जाकर क्या किया? राग-द्वेष को जीत लिया तो फिर जंगल में जाने की अपेक्षा भी क्या है? भीड़ में रहें या एकांत में, आत्म-निग्रह की साधना करें। आज डुंगरी आना हुआ है। श्रावक समाज व सभी में धर्म की चेतना रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि मनुष्य जन्म अमूल्य है, पर वह अमूल्य तब बनता है, जब आदमी मूल्यों को समझने का प्रयत्न करता है, मूल्यों को अपने जीवन में उतार लेता है। अनाग्रह भी एक मूल्य है, तो अनासक्ति भी एक मूल्य है। हम जीवन में अनासक्त को प्राप्त कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। गुरुदेव भी देह में रहकर विदेह में रहते हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में सभाध्यक्ष मांगीलाल हिरण, तेयुप अध्यक्ष सिद्धार्थ भटेवरा ने अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति हुई। अणुव्रत समिति से अर्जुन मेड़तवाल ने स्कूल परिवार व स्थानीय सरपंच का सम्मान किया। समाज द्वारा समूह गीत भी प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
22 - 28 मई, 2023

✦ *गुरु ज्ञानदाता होते हैं। वे संस्कार भरते हैं, अनुशासन करते हैं। जिनसे कुछ प्राप्त हुआ, उनके नाम को छिपाएँ क्यों?*
—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा को निर्मल बनाने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

बारडोली, सूरत ६ मई, २०२३

तेरापंथ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी सोमवार शाम ही विहार कर बारडोली पधार गए थे। बारडोली में श्रावक समाज को मंगल देशना प्रदान करते हुए युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि बत्तीस आगम हमारे यहाँ प्रमाण रूप में संबद्ध हैं, उनमें एक है—उत्तराध्ययन। उसमें छत्तीस अध्ययन हैं। इनमें तात्त्विक जानकारियाँ और कुछ घटनाएँ व कथानक प्राप्त होते हैं। इसमें अप्रमाद का संदेश, अध्यात्म साधना के प्रयोग, निर्देश प्राप्त होते हैं।

उत्तराध्ययन का दसवाँ अध्ययन है, जो छोटा सा है, जिसका गुरुदेव तुलसी पश्चिम रात्रि में खड़े-खड़े स्वाध्याय करते थे। यह अध्ययन प्रमाद न करने का संदेश देने वाला है। 'समयं गोयम मा पमायए' ये चरण बार-बार दोहराया गया है। इस अध्ययन में अनित्यता की बात बताई गई है।

जैसे वृक्ष का पका हुआ पत्ता गिर जाता है, उसी प्रकार मनुष्य का जीवन भी अनित्य है, एक दिन समाप्त हो जाता है। इसलिए मनुष्य को जागरूकता रखते हुए क्षण मात्र भी प्रमाद नहीं करना चाहिए। हमारा जीवन भी पर्याय है। जैन दर्शन में

केवल नित्यता और केवल अनित्यता को ही स्वीकार नहीं किया गया है। दोनों को स्वीकार किया गया है। जैन दर्शन नित्यानित्यवादी है। दीये से लेकर आकाश तक हर पदार्थ नित्य भी है, अनित्य भी है। द्रव्य है, तो पर्याय भी है। पर्याय है, तो द्रव्य भी है। प्रधानता-गौणता हो सकती है। हम जीवन की अनित्यता को चिंतन में लाएँ। यह शरीर अनित्य है, अशुचि से पैदा होने वाला है। क्लेश-कष्ट भी इस शरीर में होते हैं। आत्मा स्थायी है, आदमी चिंतन करे कि मैं स्थायी तत्त्व के लिए क्या कर रहा हूँ। हम आत्मा को निर्मल बनाने का प्रयास करें, यह काम्य है।

आज बारडोली आना हुआ है। बारडोली भवन में धार्मिक गतिविधियाँ चलती रहें। यहाँ साध्वीजी का चातुर्मास होने वाला है, उसका पूरा लाभ उठाएँ।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि अध्यात्म के क्षेत्र में साधना की अनेक पद्धतियाँ बताई गई हैं। भक्ति योग, राजयोग, नाद रोग और ज्ञान योग की साधना करते हैं। स्वाध्याय, ध्यान और मौन का अध्ययन करके हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। बारडोली के लोगों को पूज्यप्रवर का स्वल्प प्रवास प्राप्त हुआ है, पर वे इस अल्प प्रवास में बहुत कुछ प्राप्त कर अपना जीवन धन्य बना सकते हैं।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि आचार्यप्रवर ऐसे महापुरुष हैं, जिनके भीतर आदर्शों की गहराई, आचार की ऊँचाई है, तो सहनशक्ति भी बहुत अधिक है। श्रावक समाज को तारने, दर्शन देने के लिए कितने-कितने चक्कर लेकर पधारते हैं। जिस व्यक्ति में महानता होती है, वही ऐसा कार्य कर सकता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष राजेंद्र बाफना, वरिष्ठ श्रावक गौतम बाफना, सुजानसिंह मेहता, अभातेयुप उपाध्यक्ष जयेश मेहता आदि ने अपनी अभिव्यक्ति दी। तेमम व तेयुप द्वारा संयुक्त गीत प्रस्तुत किया गया। किशोर मंडल, कन्या मंडल की प्रस्तुति हुई। ज्ञानशाला, अणुव्रत समिति की ओर से भावनाएँ व्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने सम्यक् दीक्षा ग्रहण करवाई एवं किशोर मंडल, ज्ञानशाला को आशीर्वचन फरमाया। कन्या मंडल ने संकल्प स्वीकार किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

दुर्गति से बचने के लिए आदमी वीतरागता की साधना में आगे बढ़े : आचार्यश्री महाश्रमण

नवसारी, सूरत ११ मई, २०२३

अध्यात्म के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि उत्तराध्ययन सूत्र जैन आगमों में एक आगम है। उसके आठवें अध्ययन, कालियं के प्रथम श्लोक में यह प्रश्न किया गया है कि यह संसार अध्रुव-अशाश्वत है और दुःख प्रचुर है। इस संसार में ऐसा कौन-सा कर्म-कार्य है, जिसको करके मैं दुर्गति में न जाऊँ।

यह संसार जन्म-मरण वाला है। वर्तमान में हमारा मनुष्यों का जीवन है, जो अध्रुव है। हमारी कितनी पीढ़ियाँ आईं और आकर चली गई हैं। संसार की स्थिति है कि इसमें स्थायित्व नहीं है। जिसने जन्म लिया है, उसकी एक दिन मृत्यु भी हो जाती है। लोग कहते हैं कि धर्म करने की क्या जल्दी है, कल कर लेंगे।

तीन प्रकार के व्यक्तियों को 'कल कर लूँगा' कहने का अधिकार है। एक आदमी कहता है कि मेरी मौत के साथ दोस्ती हो गई। मौत आती दिखेगी तो मैं कह दूँगा कि मत आओ, तो मौत मेरी बात मान लेगी। मुझे हमेशा के लिए छोड़ देगी। दूसरा आदमी कहता है कि मैं बहुत तेज दौड़ता हूँ। मौत मुझे आती दिखेगी तो मैं तेज दौड़ जाऊँगा, मौत मुझे पकड़ ही नहीं पाएगी। तीसरा आदमी कहता है कि मैं तो कभी मरूँगा ही नहीं।

पर ये सब अयथार्थ बातें हैं। कोई ऐसी बात करता है तो वह मिथ्या भाव वाला है। मृत्यु-बुढ़ापा तो आने वाले ही हैं। मृत्यु आने के अनेक रास्ते हैं। दुर्गति से बचने के लिए आदमी वीतरागता की साधना में आगे बढ़े। वीतरागता सिद्ध होने से मुक्ति की प्राप्ति हो सकती है। साधु बनकर साधना करना तो बड़ी ऊँची बात है। बालावस्था में तो साधु बनना और अच्छी बात है। आत्मा निर्मल हो जाए।

गृहस्थ में रहकर भी धर्म के मार्ग पर चल सकते हैं। गृहस्थ जीवन में नैतिकता, ईमानदारी व नशा मुक्ति है, तो अच्छा है। बारह व्रत और सुमंगल साधना को ग्रहण करें। सम्यक्त्व पुष्ट रहे तो दुर्गति से बच सकते हैं। पुष्ट सम्यक्त्व आ जाए तो नरक-निगोद के ताला लग सकता है।

हम जैन शासन से जुड़े लोग हैं जहाँ अहिंसा, संयम व तप समता की बात है। चार तीर्थ हैं। भगवान महावीर से जुड़ा हुआ यह भैक्षव शासन तेरापंथ जिसमें हम साधना कर रहे हैं। दुर्गति से बचने का एकमात्र उपाय है—अध्यात्म की साधना। आज नवसारी आए हैं। यहाँ भी धार्मिक गतिविधियाँ चलती रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि व्यक्ति लक्ष्य बनाता है तो अपनी मंजिल तक पहुँच जाता है। आगे बढ़ने के लिए हम लक्ष्य बनाएँ। हमारा लक्ष्य विशेष हो। लक्ष्य ऐसा हो जिसका हम माप न कर सकें। हमें ऐसा लक्ष्य बनाना है, जहाँ तक हम पहुँच सकें। हमारा लक्ष्य वास्तविक हो।

पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ लिंबड़ी अजरामर संप्रदाय की साध्वी तरुणलता जी आदि तीन साध्वियाँ पधारीं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष नवरतनमल टेबा, तेयुप अध्यक्ष जगदीश काल्या, ज्ञानशाला, मुमुक्षु मोनिका पीतलिया आदि ने अपनी-अपनी भावनाएँ व्यक्त की। तेमम एवं कन्या मंडल एवं तेरापंथ समाज द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। ज्ञानशाला द्वारा अरिष्टनेमि पर सुंदर प्रस्तुति दी गई।

साधु को घमंड नहीं करना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

गंगाधारा, सूरत ८ मई, २०२३

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण ने गंगाधारा के पटेल सांस्कृतिक भवन में मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन धर्म में तपस्या की बात आती है। वैसे ही संवर और निर्जरा का भी विशेष महत्त्व है। नौ तत्त्वों में छठा तत्त्व संवर और सातवाँ निर्जरा है।

संवर का तो बहुत ही महत्त्व है कि पाप कर्म का आना रुक जाए। पहले से बंधे कर्मों को तोड़ना वह काम तपस्या से हो जाता है। हमारी आत्मा एक कुंड के रूप में है। जिसमें आते हुए पानी के नाले को बंद करना संवर है और पहले से कुंड में पड़े साफ या गंदे पानी को निकालना निर्जरा है। संवर और निर्जरा से आत्मा परम शुद्धि मोक्ष को प्राप्त कर लेती है। निरोध और निस्सारण संवर और निर्जरा की साधना होती है।

आश्रव संसार का हेतु है, मोक्ष संवर का कारण है। जीवन में विविध प्रकार के तप होते हैं। जैसे सोने का शुद्ध स्वरूप अग्नि प्रकट कर देती है, वैसे ही आत्मा का शुद्ध स्वरूप तपस्या से कर्म टूट जाने से प्रकट हो जाता है। कर्मों को काटने का उपाय तपस्या है। हम जीवन में तपस्या-निर्जरा से पूर्वार्जित कर्मों के बंधन को तोड़ने का प्रयास करें। साधु बनना तो बड़ी बात हो जाती है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति उद्गार

ऋतंभरा प्रज्ञा के नायक आचार्य महाश्रमण

❐ साध्वी रक्षितयशा ❐

दीप्त ज्योति तुम संघ दिवाकर,
भक्ति सुमन करती उपहार।
कल्पवृक्ष की छाँह शुभंकर,
मिलती रहे प्रभु वर्ष हजार।।

विश्व के समस्त शुभ एवं पवित्र तत्त्वों का समावेश जिनमें होता है वे ही गुरु बनने में समर्थ होते हैं। जैन धर्म की रत्नत्रयी में देव, गुरु और धर्म का प्रतिपादन है। इस त्रिपदी में केंद्र स्थान में गुरु विराजमान हैं, क्योंकि देव और धर्म की पहचान गुरु ही करवाते हैं। अध्यात्म जगत में गुरु की महिमा सर्वोत्कृष्ट है। संबोध सत्तरी में उल्लेख आता है कि अरिहंत की अनुपस्थिति में गुरु (आचार्य) ही तीर्थंकर का प्रतिनिधित्व करते हैं।

तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी वर्तमान के जैनाचार्यों में सर्वाधिक प्रतिष्ठित हस्ताक्षर हैं। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के कुशल नेतृत्व में तराशी गई इस प्रतिमा में गुण पुष्पों की अनुपम बगिया महक रही है। अनुत्तर संयम, अनुत्तर ज्ञान व अनुत्तर साधना से अलंकृत पूज्यप्रवर का जीवन संतता के शिखर पर विराजमान है।

प्रखर संयम साधक! आप शांत-प्रशांत, उपशांत साधक हैं। आत्मरिपुओं को पराजित करने वाले वीर सिकंदर हैं। निर्विकारता, निर्लिप्तता, निर्मलता, निस्पृहता व निश्छलता के सशक्त बॉडीगार्ड हमेशा आपकी सेवा में हाजिर रहते हैं। जाति, धर्म, संप्रदाय, वर्ण आदि की संकीर्णता की दीवारों से मुक्त करने में आप अहर्निश प्रयत्नशील रहते हैं। अज्ञानरात्रि में सोये मानव को ज्ञान का अलार्म बजाकर आप संपूर्ण भारत में जागरण का शंखनाद कर रहे हैं।

ऋतंभरा प्रज्ञा के नायक! 'गुरु कृपा हि केवलं, शिष्यं परं मंगलं' अर्थात् गुरु की कृपा से बढ़कर शिष्य के लिए कोई मंगल महल नहीं होता। गुरु कृपा से प्रज्ञाचक्षु नयनसुख बन जाता है। विकलांग व्यक्ति मैराथन विजेता बन जाता है। पंगु पर्वत पर आरोहण कर लेता है। परम श्रद्धेय ने भगीरथ पुरुषार्थ करके जैनत्व को जन-जन के जीवन में जोड़ा है। अज्ञ-प्राज्ञ, साक्षर-निरक्षर, नेता-प्रजा, दर्शक-श्रोता सभी श्रेणी के लोग आपकी आगमवाणी से लाभान्वित हो रहे हैं।

प्रशांत चेता! आर्षवाणी में कहा गया है—'पुठवी समे मुणी ह्वेज्जा' पृथ्वी की तरह आपश्री की क्षमा अनुल्लंघनीय है। सहनशीलता बेजोड़ है। परीषहों से अपराजित आपका व्यक्तित्व करिश्माई है। थर्मामीटर से सूर्य की गर्मी को मापना, फुटपट्टी से समुद्र की गहराई को नापना और आकाश के तारों को गिनना किसी के लिए भले संभव हो पर अध्यात्म योगी आचार्य महाश्रमण श्री के गुणों की गणना असंभव नहीं अति असंभव है।

अस्तु! पट्टोत्सव, जन्मोत्सव तथा दीक्षोत्सव के सुपावन अवसर पर तेरापंथ अधिनायक को सहस्त्रों बार भावभीनी वंदना! अभिवंदना!! अभ्यर्थना---!!!

जीवन की हर साँस' में तेरी ही तस्वीर है।
ज्योत जली अंतर में अनुपम जगी सुप्त तकदीर है।।

कम समय में नमि मुनि ने तप का इतिहास बना दिया

शास्त्रीनगर।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में मुनि नमि कुमार जी ने २५ दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। मुनि कमल कुमार जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि मुनि नमि कुमार जी को दीक्षित हुए अभी ७ वर्ष पूर्ण नहीं हुए परंतु इन्होंने जो तपस्या का कीर्तिमान बनाया है यह प्रशंसनीय है। इसी शास्त्रीनगर में दो महीने पूर्व २७ की तपस्या का पारणा किया था। पुनः तेरापंथ भवन के लोकार्पण के अवसर पर यहाँ आना हो गया और आज इनके २५ दिन का तप हो गया। इन्होंने पंद्रह तक की लड़ी संपन्न कर ली है। २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३८, ६२ तक की तपस्या करके एक साहस का परिचय दिया है। तपस्या का लक्ष्य केवल कर्म निर्जरा हो जिससे मति और गति अपने आप श्रेष्ठ हो।

मुनि नमि कुमार जी ने अपने वक्तव्य में पूज्यप्रवर के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि मेरे प्रबल पुण्याई का उदय हुआ है कि इस अवस्था में दीक्षा और ऐसे अग्रगण्य मिले जिससे ही मैं कुछ तपस्या कर रहा हूँ। इस अवसर पर मुनि कमल कुमार जी स्वामी ने स्वरचित गीत का संगान कर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। मुनि अमन कुमार जी ने भी नमि मुनि के तप की अनुमोदना की। उपस्थित भाई-बहनों ने दो-दो सामायिक एकाशन आयंबिल उपवास बेला करके तपस्वी मुनि का वर्धापन किया। मुनिश्री का दोनों बार प्रवास किरण कुंज आसकरण आंचलिया के निवास स्थान पर हुआ।

ज्ञानशाला का शुभारंभ

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में गंगेज स्काई दक्षिण हावड़ा में नई ज्ञानशाला का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जिस प्रकार बरसात में गाड़ी के कांच पर आई हुई पानी की बूंदों को साफ करने वाला वाईपर होता है उसी प्रकार जीवन रूपी गाड़ी के कांच पर पाप रूपी पानी को साफ करने वाला वाईपर है। आत्मशुद्धि में ज्ञान की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। ज्ञान प्राप्ति का साधन है—ज्ञानशाला।

ज्ञानशाला के माध्यम से संस्कारों का बीजारोपण होता है। ज्ञानशाला से चरित्र का विकास और सर्वतोमुखी विकास संभव है। ज्ञानार्थी व प्रशिक्षक निष्ठा के साथ अध्ययन और अध्यापन कराएँ। इस अवसर पर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना, ज्ञानशाला के संयोजक मालचंद भंसाली, मुख्य प्रशिक्षिका सरिता गिड़िया उपस्थित रहे। संचालन मंत्री बसंत पटावरी ने किया। आभार ज्ञापन सरिता गिड़िया ने किया।

आचार्य महाश्रमण जन्मोत्सव, पट्टोत्सव पर

महातपस्वी महासंत री

● साध्वी अणिमाश्री ●

जन्मोत्सव प्रभुवर रो आयो, दसू दिशावां रिदावै।
धरती-अम्बर सागर, नदियाँ, झूम-झूम मंगल गावै।
हर्षित पुलकित मन कोयलियाऽऽऽ स्वर्णोत्सव है गुरुवर रो।
मोद मनावै संघ समूचो, कल्याण उत्सव प्रभुवर रो।
तेरापंथ अखिलेश्वर रीऽऽऽ बोलो सब मिल जय-जय-जय।।

पट्टोत्सव पर अनहद खुशियाँ, पोर-पोर रस बरसावै।
चमक रह्या दिनकर ज्यू गुरुवर संघ-गगन ने चमकावै।
घणै कोड स्यूं जन-जन थांरोऽऽऽ निरखै मुखड़ो मनहारो।
थांरी बढ़ती पुण्याई नै लखकर घालै है सब थुथकारो।
तीन लोक रे भुवनेश्वर रीऽऽऽ बोलो सब मिल जय-जय-जय।।

थारै चरणां स्यूं ऊर्जा लेवण, भक्त री टोल्या आवै।
पग न टिकै धरती पर त्वारां जद-जद बे दरसण पावै।
लाखां लोगां री श्रद्धा भक्ति रोऽऽऽआज अनूठो रंग खिल्यो।
हुयो जी सोरो मिल्यो उजारो, भायां स्यूं ओ संघ मिल्यो।
चरणां शीश झुकावै सुरनरऽऽऽ बोलो सब मिल जय-जय-जय।।

लय : बो महाराणा प्रताप कठै---

आचार्यप्रवर के दीक्षा दिवस पर

अर्हम्

● साध्वी नीतिप्रभा ●

तेरी नेहिल नजरों में ही आशियाना है हमारा प्रभो।
जीवन की हर साँसों पर अभिनंदन तुम्हारा प्रभो।।

रेशम किरणें बिछी नील नभ में, विरुदावलिया गावै है।
धरा का कण-कण आज, मधुर नज्में गुण गुणवै है।
दीक्षा दिवस पर बरसे, बरसे आनंद की अमृत धारा है।।

माँ नेमा तुम निरखो, तेरा परिजात आज तात बना।
चरण-चरण दे, तारण-तिरण, सबका यही नाथ बना।
श्वेत कणों का सिंचन देकर, नंदन वन सवारा प्रभो।।

करुणा के सागर तुम, श्रम के महाहिमालय हो।
कलाकार बेजोड़ तुम, मेरे तो परमेश्वर प्यारे हो।
बुनते जाओ जो बुनना है, तन-मन अर्पित सारा प्रभो।।

आलंबन स्त्रोत सदन में, एक तुम्हारी जड़ी सूरत।
करती अहर्निशी तेरी अर्चा, मेरे तो तुम ही राम मूरत।
तारो-तारो है अखिलेश्वर! पाऊँ भव किनारा प्रभो।।

लय : चांद सी महबूबा---

साधु को घमंड नहीं करना...

(पृष्ठ २ का शेष)

सहन करना बड़ी साधना है। साधु को घमंड नहीं करना चाहिए। कषायों को कमजोर करने की साधना भी बहुत बड़ी साधना है, तपस्या है। कषायमुक्ति ही मुक्ति है। श्रामण्य का सार है कि उपशम की साधना करें।

प्रातः विहार के पूर्व पूज्यप्रवर ने संथारा साधिका को दर्शन दिए। श्रावकों को भी उनके निवास पर मंगलपाठ सुनाया। सायं पूज्यप्रवर ने बारडोली के लिए विहार करने की घोषणा करवाई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
22 - 28 मई, 2023

✦ *विद्यार्थी जीवन में एक समय ऐसा आता है, जब उसे अपनी दिशा और लक्ष्य का निर्धारण करना होता है। यदि लक्ष्य सम्यक् हो और उस दिशा में सत्पुरुषार्थ हो तो सफलता का वरण किया जा सकता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

'उर्वी मुखरित दीवारें' कार्यक्रम का आयोजन

पचपदरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार पचपदरा में कन्या मंडल द्वारा 'उर्वी मुखरित दीवारें' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सी-२० के अंतर्गत सी-२० में अभातेममं का चयन होने पर पचपदरा, कन्या मंडल द्वारा शहर की विभिन्न दीवारों (हॉस्पिटल एवं स्कूल) पर कलाकृति बनाई गई। इस कलाकृति के माध्यम से हमने पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता, वृक्षारोपण का संदेश दिया।

अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया, सेलम की अध्यक्षा में इस दीवार का अनावरण किया गया। राष्ट्रीय महामंत्री मधु देरासरिया, सूरत राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सरिता डागा, राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी अर्चना भंडारी, राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य माला कातरेला, सारिका वागरेचा एवं कन्या मंडल प्रभारी कीर्ति चोपड़ा की उपस्थिति रही।

द पावर ऑफ डिसिप्लीन कार्यशाला का आयोजन

जसोल।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं, जसोल द्वारा सोहनी देवी सालेचा की अध्यक्षता में एवं साध्वी गुप्तिप्रभा जी के सान्निध्य में 'द पावर ऑफ डिसिप्लीन' कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र से की गई। संकल्प गीत से मंगलाचरण किया गया। अध्यक्ष सोहनी देवी सालेचा ने सभी बहनों का स्वागत किया। उपासिका मोहनी देवी संकलेचा ने अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल संरक्षिका पुष्पा देवी बुरड़ ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी अनुशासन में नहीं चलने वालों को, साधु को ही नहीं, श्रावकों को भी संघ से अलग कर देते। जयश्री सालेचा ने कहा कि हर कार्य को करने में पुरुषार्थ, श्रम, करेंगे तो ही मंजिल को पा सकेंगे। संतोष डोसी ने कहा कि मर्यादाओं को दिल से अपनाने से जीवन संवर जाता है।

ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका चंदा चोपड़ा ने महासती गुलाबाजी की अनुशासन पर जीवन की घटना के बारे में बताया। मंडल मंत्री ममता मेहता ने गीत और लीला देवी छाजेड़ ने मुक्तक के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की।

साध्वी गुप्तिप्रभा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक प्राणवान धर्मसंघ है। इसकी नींव अनुशसन है। श्रावक आदि अपनी इच्छाओं पर अनुशासन कर ले तो जीवन में सबसे सुखी व्यक्ति बन सकता है। आभार ज्ञापन फेनादेवी भंसाली ने किया और कार्यशाला का संचालन उपाध्यक्ष अरुणादेवी डोसी ने किया।

सफलता के लिए अनुशासन जरूरी

कांकरोली।

मुनि संजय कुमार जी के सान्निध्य में अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, कांकरोली ने 'द पावर ऑफ डिसिप्लीन' शिल्पशाला का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम कार्यक्रम की शुरुआत मुनि सिद्धप्रज्ञ जी के नमस्कार महामंत्र से हुई। मंडल की पूर्व अध्यक्ष नीता सोनी ने आचार्यश्री तुलसी द्वारा रचित गीत से मंगलाचरण किया। तेममं की अध्यक्ष इंद्रा पगारिया ने सभी बहनों का स्वागत किया। अनुष्का सरुपरिया और सरोज सोनी ने अपने विचार व्यक्त किए।

मुनि धैर्य कुमार जी ने अनुशासन क्या है? उसके आधार और पोषक तत्त्वों के बारे में समझाया। मुनि प्रसन्नकुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने 'निज पर शासन, फिर अनुशासन' का नारा दिया था। पहले स्व अनुशासन होगा तो फिर अनुशासन अपने आप हो जाएगा। मुनि प्रकाश कुमार जी ने कहा कि अनुशासन का स्वीकरण–दृष्टानिष्ठा, समर्पण और सहिष्णुता के बिना संभव नहीं। कार्यक्रम का संचालन तारा बाफना और संगीता धींग ने संयुक्त रूप से किया। मंडल की मंत्री मनीषा कच्छारा ने मुनिवृंद और सभी बहनों का आभार ज्ञापन किया। अनुशासन कार्यशाला में गेम का भी आयोजन किया गया।

उम्मीद एक बेहतर कल की कार्यशाला का आयोजन

भीलवाड़ा।

अभातेममं के निर्देशानुसार संस्कार निर्माण परियोजना के अंतर्गत उम्मीद एक बेहतर की कल कार्यशाला, भीलवाड़ा क्षेत्र के पाँच सरकारी स्कूल में तेममं द्वारा आयोजित की गई।

अभातेममं के लक्ष्य बच्चों में संस्कार निर्माण कैसे हो इस हेतु देश भर की महिला मंडल शाखाओं में अलग-अलग विद्यालयों में इस उपक्रम को गतिशीलता प्रदान की।

तेममं की अध्यक्षा मीना बाबेल, मंत्री रेणु चोरड़िया एवं उनकी कार्यकारिणी टीम ने इस प्रोजेक्ट की सफलता के लिए अच्छा श्रम एवं समय का नियोजन करते हुए अनवरत कार्यक्रम कराए।

राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल शास्त्री नगर की संयोजिका विमला रांका, सेठ मुरलीधर मानसिंह का गर्ल्स स्कूल संयोजिका स्नेहलता पितलिया, राजकीय उच्च प्राथमिक स्कूल सिंघ नगर संयोजिका स्नेहलता झाबक, राजकीय उच्च प्राथमिक स्कूल जवाहर नगर संयोजिका पायल बुलिया, आर०के० कॉलोनी वार्ड नं० ८ स्कूल संयोजिका सुमन दुगड़ सभी संयोजिकाओं एवं इनकी टीम ने पूरी एकजुटता, उत्साह, उमंग के साथ प्रोजेक्ट के हर विषयों सुचारु प्रारूप के साथ स्कूल में कराया।

सभी स्कूल के बच्चों ने अपने अनुभव बताए। स्कूल स्टाफ ने तेममं के प्रति आभार व्यक्त किया।

वर्षीतप करने वाले भाई-बहनों का सम्मान

वाशी।

तेममं द्वारा दो चरणों में कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रथम चरण में वर्षीतप करने वाले भाई-बहनों का सम्मान किया गया और द्वितीय चरण में अभातेममं के निर्देशानुसार मुंबई महिला मंडल के तत्त्वावधन में वाशी महिला मंडल द्वारा आयोजित की गई।

'उत्सव रिश्तों का, प्रेम ननद-भाभी का' एवं 'पॉवर ऑफ द डिसिप्लीन' कार्यशाला का आयोजन प्रथम चरण में हुआ। सामूहिक वर्षीतप अनुमोदना समारोह की शुरुआत नमस्कार महामंत्र प्रेरणा गीत और चौबीसी के संगान से हुई। स्वागत वक्तव्य और तपस्या की अनुमोदना इंदु बड़ाला ने की।

सभी वर्षीतप के तपस्वियों का सम्मान किया गया। संचालन सिटी खाटेड़ ने किया।

द्वितीय चरण में निर्मला चंडालिया ने कार्यशाला की कमान संभाली। ननद-भाभी ने एक-दूसरे का परिचय दिया और सुंदर ढंग से अपनी-अपनी बात रखी। उन्होंने गेम के द्वारा एक-दूसरे के रिश्तों को समझाया। सभी को रिश्तों के खट्टे-मीठे अनुभव साझा किए। १० जोड़ों ने भाग लिया। जिसमें प्रथम सेजल सिंयाल, प्रतिभा मेड़तवाल, द्वितीय ललिता चंडालिया, निर्मला सिंघवी एवं तृतीय पूनम दुगड़, संगीता बाफना रहे।

ननद-भाभी और परिवार में रिश्तों में डिसिप्लीन जरूरी होता है कैसे आपस में सामंजस्य बिठा सकते हैं, उसके बारे में निर्मला चंडालिया ने सुंदर तरीके से महिला मंडल को समझाया। मुंबई कार्यसमिति सदस्य अनीता सियाल, कलपना कोठारी एवं बहनों की उपस्थिति रही।

विशेष सहयोग सह-संयोजिका अनिता चपलोत का रहा। बबीता बाफना, शिल्पा सोनी, ममता ढालावत, प्रीति धोखा, आशा बाफना, रंजन हिरण सभी बहनों का सहयोग रहा। महाराष्ट्र प्रभारी निर्मला चंडालिया ने दोनों कार्यशाला को नए रूप में करवाया।

उत्सव रिश्तों का, प्रेम ननद-भाभी का

चेन्नई।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में 'उत्सव रिश्तों का प्रेम ननद-भाभी का' कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। प्रेरणा गीत का संगान तेममं द्वारा हुआ। अध्यक्षा पुष्पा हिरण ने सभी जोड़ों का स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

महिला मंडल द्वारा ननद-भाभी की सुंदर लघु नाटिका की गई। कुल ७ जोड़ियों ने भाग लिया। जोड़ियों में प्रथम स्थान प्राप्त किया लाडबाई चोरड़िया एवं विमला कोठारी ने, द्वितीय स्थान प्राप्त किया स्नेहलता कोठारी एवं रेखा लोढ़ा ने। मनोरंजन के लिए गेम का आयोजन किया गया। गेम में प्रथम स्थान पूजा वेदमूथा, द्वितीय संगीता आच्छा एवं तृतीय स्थान भावना बाबेल ने प्राप्त किया।

सभी जोड़ियों को एवं प्रतियोगियों को महिला मंडल द्वारा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन संयोजिका संगीता आच्छा एवं रानी मांडोत ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सहमंत्री कंचन भंडारी ने किया।

उर्वीमुखरित दीवारों का अनावरण

हैदराबाद।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में कन्या मंडल, हैदराबाद द्वारा उर्वी मुखरित दीवारें कार्यक्रम का पहला एवं दूसरा चरण का आयोजन अक्षरा वागदेवी इंटरनेशनल स्कूल एवं स्कूल के पास सार्वजनिक क्षेत्र सिकंदराबाद में आयोजित किया गया।

जी-२० के अंतर्गत सी-२० में अभातेममं का चयन होने पर हैदराबाद कन्या मंडल द्वारा स्वच्छ भारत अभियान एवं पर्यावरण संरक्षण विषय पर कलाकृति बनवाई गई।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। कन्या मंडल संयोजिका प्रार्थना ने पधारे हुए सभी पदाधिकारीगण, सभी बहनों तथा कन्याओं का स्वागत किया। कन्या सह-प्रभारी चंदन कोठारी ने कार्यक्रम की जानकारी दी। महिला मंडल अध्यक्षा अनीता गिडिया ने शुभकामनाएँ प्रेषित की।

पूर्वाध्यक्ष रीता सुराणा ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए मंगलकामना प्रेषित की। अक्षरा स्कूल की प्रिंसिपल वाहजा मेम एवं महबूब कॉलेज के प्रिंसिपल पी०एल० श्रीनिवास सर ने कन्याओं को प्रोत्साहित करते हुए कलाकृति की सराहना की। कार्यक्रम में महिला मंडल अध्यक्षा अनीता गिड़िया, पूर्वाध्यक्ष रीता सुराणा एवं महिला मंडल की बहनें जूली बैद, सरला मेहता, संतोष पींचा, वीणा बैद, स्कूल की प्रशिक्षिका मोनिका आदि अन्य प्रशिक्षिकाओं की उपस्थिति रही।

कन्या मंडल की संयोजिका प्रार्थना सुराणा, रीतू जैन, गरिमा नौलखा, प्रेक्षा बैद, प्रेक्षा श्यामसुखा, डिंपल आंचलिया, जीभिका बैद का सहयोग रहा। सभी का आभार प्रकट कन्या मंडल प्रभारी निशा पींचा ने किया।

पाक कला प्रतियोगिता का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेममं द्वारा निर्देशित पाक कला प्रतियोगिता का आयोजन तेरापंथ कन्या मंडल आर०आर० नगर द्वारा किया गया। कन्या मंडल की सात कन्याओं ने भाग लिया तथा भारतीय राजस्थानी पारंपरिक खाना जो तीज-त्योहार पर बनाया जाता है स्वयं अपनी दादी-नानी की सहायता से बनाकर प्रतियोगिता में भाग लिया।

महिला मंडल अध्यक्षा लता बाफना ने सभी का स्वागत किया। अभातेममं द्वारा निर्देशित यह प्रतियोगिता 'कहीं गुम न हो जाए–दादी-नानी का खाना' हमारी पारंपरिक खान-पान को बढ़ावा देती है। कन्या मंडल प्रभारी सुधा दुगड़ ने संचालन किया।

प्रतियोगिता में विजेता कन्याओं को पुरस्कृत किया गया। प्रथम स्थान पर रही आंचल बाफना, द्वितीय स्थान पर चेतना संचेती एवं तृतीय स्थान पर महक बेद रही। निर्णायकगण इंदु बुच्चा एवं दीपिका दुगड़ ने कन्याओं द्वारा बनाए पकवान को टेस्ट किया एवं खाना बनाने के टिप्स भी दिए। महिला मंडल कार्यकारिणी सदस्य रजनी संचेती का सहयोग रहा। जूही कोठारी, रीतमहेर, संचेती, आर्या, भूमिका बोथरा, उमंग बेद को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। कन्या मंडल सह-संयोजिका आर्या संचेती ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

अनंत शक्तियों का भंडार है भक्तामर

गुलाबबाग।

तपस्वी डॉ० मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी, मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा, गुलाबबाग की आयोजना में बिहार की धरती पर प्रथम भक्तामर स्तोत्र मंत्र यंत्र महाअनुष्ठान हुआ। इस अवसर पर मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी ने कहा कि आचार्य मानतुंग द्वारा रचित भक्तामर अनंत शक्तियों का भंडार है। मंत्रों का खजाना है। इसका वास्तविक नाम आदिनाथ स्तोत्र है, जो भक्तामर स्तोत्र नाम से प्रसिद्ध हो गया। इसमें आदिनाथ ऋषभ देव भगवान की स्तुति है। तीर्थंकरों की शक्ति अनंत और अतुलनीय होती है। उनका नाम जिस किसी भी स्तवन और मंत्र में जुड़ जाता है वह अपने आपमें प्रभावशाली बन जाता है। भक्तामर के रचयिता आचार्य मानतुंग ने अपने आराध्य से किसी प्रकार की कोई माँग नहीं रखी। श्रद्धा भक्ति के रस में सराबोर होकर अपने आराध्य आदिनाथ प्रभु ऋषभ देव की सिर्फ स्तुति की। उस भक्तिपूर्ण स्तुति से चमत्कार घटित हो गया। ४८ तालों के भीतर मानतुंग को राजा ने कैद करवा दिया था, वे सारे के सारे ताले स्तुति के प्रभाव से स्वतः तड़ातड़ टूट गए। तत्कालीन राजा हर्षदेव यह चमत्कार देखकर जैनाचार्य के आगे नतमस्तक हो गया। वह भक्तामर एक कालजयी रचना बन गई। स्वास्थ्य संबंधी, व्यापार संबंधी, आपसी रिश्तों से संबंधित और नजर दोष आदि सैकड़ों समस्याओं का समाधान भक्तामर से मिल जाता है।

मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि प्रतिदिन भक्तामर का पाठ करने से घर का वातावरण शुद्ध बनता है। सकारात्मक ऊर्जा आसपास के क्षेत्र को प्रभावित करती है। बहुत सारी समस्या अपने आप समाहित हो जाती हैं। कर्म निर्जरा के साथ-साथ आध्यात्मिक लाभ प्राप्त होता है। जीवन के लिए भक्तामर बहुत उपयोगी है। व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से इसका पाठ करना चाहिए। मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी स्वयं साधक, जपाराधक हैं। आपने अनेकों बार अनुष्ठान करवाकर कितने-कितने व्यक्तियों के भीतर भक्तामर के प्रति आस्था जागृत की है। सभी के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुशील संचेती ने बताया कि साढ़े चार घंटे से अधिक चले अनुष्ठान में चार साधकों ने आराधना की। भक्तामर स्तोत्र, ऋद्धिजाप, मंत्र जाप की आराधना हुई। आसपास के अनेक क्षेत्रों के श्रावक-श्राविका सहभागी बने। मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी, मुनि प्रशांत कुमार जी, मुनि कुमुद कुमार जी, मुनि विमलेश कुमार जी, मुनि सुबोध कुमार जी ने एक स्वर में आराधना करवाई।

स्वागत भाषण अध्यक्ष सुशीला संचेती ने किया। कोलकाता से समागत मधु जैन, मनोज पुगलिया, अमरसिंह जैन, श्रुति चोपड़ा ने अनुष्ठान के अनुभव सुनाए। आभार सभा के मंत्री सुनील भंसाली ने व्यक्त किया।

मन को सुमन और अमन बनाएँ

शाहीबाग, अहमदाबाद।

प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशन में प्रेक्षावाहिनी शाहीबाग, अहमदाबाद व तेरापंथ सेवा समाज द्वारा आयोजित प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १४वें महाप्रयाण दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में डॉ० मुनि मदन कुमार जी ने कहा कि मन को सुन और अमन बनाने का सशक्त माध्यम है—प्रेक्षाध्यान। प्रेक्षाध्यान निर्विचार के प्रयोग करवाए। मुनिश्री ने आगे कहा कि दीर्घ श्वास प्रेक्षाध्यान एक ऐसा माध्यम है जिससे श्वास हमारे बाहर और भीतर दोनों जगह यात्रा करता है। आवश्यकता इस बात की है कि दीर्घ श्वास को प्रेक्षा जीवन की प्रयोगशाला बनाएँ तो मन को सुन बनाकर अमन की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है।

मुनि सिद्धार्थ कुमार जी ने कायोत्सर्ग का महत्त्व बताते हुए प्रयोग करवाए। प्रेक्षा प्रशिक्षक धर्मेन्द्र कोठारी व विमल बाफना ने प्रेक्षा गीत से मंगलाचरण व त्रिपदी वंदना करवाई। तेरापंथ सेवा समाज के प्रधान ट्रस्टी सज्जनराज सिंघवी ने आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी। धनराज छाजेड़ ने श्वास को दीर्घ बनाने के प्रयोग कराए। प्रेक्षा प्रशिक्षक जवेरीलाल संकलेचा ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराते हुए संयोजन किया। तेरापंथ सेवा समाज अध्यक्ष नानालाल कोठारी ने आभार ज्ञापन किया। लगभग २५ साधक-साधिका ने उत्साह के साथ भाग लिया।

✦ *आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✳ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000
✳ श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

साउथ हावड़ा।

डूंगरगढ़ निवासी, साउथ हावड़ा प्रवासी रंजीत पुगलिया के सुपौत्र एवं रोहित-खुशबू पुगलिया के सुपुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक पवन कुमार बैंगानी, राजेश कुमार चिंडालिया एवं सुनीत नाहटा ने संपूर्ण विधि एवं मंगल मंत्रोच्चार द्वारा कार्यक्रम संपादित करवाया।

तेयुप साउथ हावड़ा के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा एवं महिला मंडल अध्यक्षा चंद्रकांता पुगलिया ने परिषद की ओर से पारिवारिक जनों को मंगलभावना यंत्र भेंट किया।

नूतन गृह प्रवेश

अहमदाबाद।

ऋषभ दुगड़ पुत्र बिमल सिंह दुगड़ के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक प्रकाश धींग ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ संपादित किया।

परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक की भेंट दी गई। परिवार की ओर से संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम का संचालन संस्कारक सहमंत्री जय छाजेड़ ने किया।

अहमदाबाद।

अशोक कुमार, हितेश कुमार, विवेक कुमार श्रीश्रीमाल के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक वैभव कोठारी व प्रदीप बागरेचा ने मंत्राच्चार के साथ संपादित किया।

तेयुप कार्यसमिति सदस्य विजय छाजेड़ भी उपस्थित रहे। परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। परिवार की ओर से संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

स्वास्थ्य जाँच शिविर

बैंगलुरू।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के ६२वें जन्म दिवस पर तेयुप, बैंगलुरु द्वारा स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया। परिषद द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, राजाजीनगर एवं आडगुड़ी में आयोजित स्वास्थ्य जाँच शिविर में रियायती दरों पर विभिन्न प्रकार की जाँचों की गईं।

शिविर में कंप्लीट ब्लड काउंट, ईसीजी, पिलिड प्रोफाइल, किडनी प्रोफाइल, लीवर प्रोफाइल, थायरॉयड प्रोफाइल आदि जाँच की गई। राजाजीनगर सेंटर में कुल ५५ लाभार्थी एवं आडगुड़ी सेंटर में १४ लाभार्थियों ने इस स्वास्थ्य जाँच शिविर का लाभ उठाया। शिविर में स्टॉफ एवं परिषद कार्यकर्ताओं का सहयोग रहा।

आध्यात्मिक मिलन एवं धर्मचर्चा

अशोक विहार, दिल्ली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी का मॉडल टाउन, तेरापंथ भवन से अशोक विहार जैन स्थानक में पदार्पण हुआ। वहाँ विराजित प्रज्ञा महर्षि मुनि उदय जी के साथ आध्यात्मिक मिलन और चर्चा-वार्ता के पश्चात सामूहिक प्रवचन हुआ, जिसमें मॉडल टाउन, भीनगर, शालीमार बाग के भाई-बहनों ने भी सामायिक सहित प्रवचन का लाभ लिया। मुनि कमल कुमार जी ने अपने कहा कि आज जो दिनोदिन समस्या बढ़ती नजर आ रही है, उसका मुख्य कारण एक शब्द में कहें तो वह बढ़ता हुआ असंयम ही है। जब तक व्यक्ति में संयम की चेतना का जागरण नहीं होगा तब तक समस्या वर्धमान होती जाती है। संयम का अंकुश व्यक्ति को प्राणवान, चरित्रवान, ज्ञानवान, श्रद्धावान बना सकता है।

उदय मुनिश्री ने कहा कि हम औरों को देखते हैं, पुद्गलों को देखते हैं, पौद्गलिक सुखों में अनंत काल से लगे हुए हैं। जब तक आत्मदर्शी नहीं बनेंगे तब तक सच्चा आनंद प्राप्त नहीं हो सकता। मुनिश्री को स्थानक के अध्यक्ष-मंत्री सहित साधु-साध्वियों में भी विराजने की अर्ज की। मुनिश्री के सहयोगी मुनि नमि कुमार जी की तपस्या निरंतर वर्धमानता की ओर अग्रसर है।

✦ *पुण्य के प्रभाव से व्यक्ति को सुमधुर वाणी, शारीरिक स्वास्थ्य, सज्जनता, शालीनता, तीक्ष्ण बुद्धि आदि की प्राप्ति होती है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी का जन्मोत्सव, पदाभिषेक एवं दीक्षा दिवस के आयोजन

रोहिणी, दिल्ली

साध्वी कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में एवं रोहिणी तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में आचार्यश्री महाश्रमण पदाभिषेक दिवस मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी अध्यात्म चेतना के महापुरोधा हैं, जो अपनी तेजस्विता, वर्चस्विता और ओजस्विता से संपूर्ण मानव जाति की अध्यात्म शक्ति को जगाने हेतु सतत् प्रयासरत हैं। इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में हर वर्ष नए-नए रिकॉर्ड स्थापित कर रहे हैं। पैदल यात्रा ५० हजार किलोमीटर चलने का रिकॉर्ड हो या एक दिन में ४७ किलोमीटर विहार करने हेतु मिला अवार्ड हो। सप्तवर्षीय अहिंसा यात्रा ने नशामुक्ति, सद्भावना एवं नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा जैसे जन-कल्याण जैसे संकल्पों ने पूरे विश्व को सहलाया है। ऐसे महान पुरुष की सन्निधि युगों-युगों तक जन-जन तक मिलती रहे, प्रकाश-स्तंभ की तरह प्रकाशित करती रहे, शुभकामना।

इस अवसर पर साध्वी सौभाग्ययशा जी, साध्वी कल्याणयशा जी, साध्वी कर्तव्ययशा जी ने अपनी भावना के द्वारा गुरुदेव की अभ्यर्थना की। दिल्ली स्वास्थ्य विभाग के श्याम सुंदर जैन, रतनलाल जैन एवं विमला सुराणा ने अपने विचारों एवं गीतों के द्वारा दीर्घायु की मंगलकामना की।

अररिया कोर्ट

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी का १४वाँ पदाभिषेक समारोह मुनि डॉ० ज्ञानेंद्र कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में आरिया कोर्ट के तेरापंथ भवन में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल मंगलाचरण के साथ शुरू हुआ। तत्पश्चात सलोनी भूरा ने कविता के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किए तथा महिला मंडल की मंत्री माला छाजेड़ ने अपना वक्तव्य रखा।

मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी स्वामी ने आचार्यश्री महाश्रमण जी की जीवनी पर प्रकाश डाला। मुनि सुबोध कुमार जी स्वामी ने अपने भाव व्यक्त किए। मंच संचालन का कार्यक्रम मुनि विमलेश कुमार जी ने किया।

मंडिया

स्थानीय तेरापंथ भवन में आचार्यश्री महाश्रमण जी के ५०वें दीक्षा दिवस एवं भक्ति संध्या का आयोजन मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप, मंडिया द्वारा किया गया।

मुनि रश्मि कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी सिर्फ बारह वर्ष की बाल अवस्था में जैन मुनि बने, आगमों का गहन अध्ययन किया और गुरु तुलसी व गुरु महाप्रज्ञ जी दोनों के सान्निध्य में रहने, सीखने का अवसर मिला।

मुनि प्रियांशु कुमार जी ने कहा कि आचार्य महाश्रमण जी की आचारनिष्ठा, सत्यनिष्ठा, अध्यात्मनिष्ठा, गुरुनिष्ठा बेजोड़ है, विलक्षण है। आप करुणा व विनम्रता के अथाह महासागर हैं।

तेरापंथी सभा अध्यक्ष नरेंद्र दक ने उनके जीवन प्रसंगों को बताते हुए उन्हें साधना के शिखर पुरुष बताया व संपूर्ण समाज की ओर से उनके ५०वें संयम जीवन की अभिवंदना की।

मंगलाचरण से शुरू हुई भक्ति संध्या में गायिका ऋतु दक ने सुंदर प्रस्तुति दी। महक भंसाली, किशनलाल आच्छा, अभिषेक भंसाली, पुष्पा बाफना सभी ने गुरुदेव के प्रति अपनी भावनाएँ रखते हुए गीतों का संगान किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्थानीय धर्मप्रेमी उपस्थित रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथी सभा, महिला मंडल, तेयुप, अणुव्रत समिति, कन्या मंडल के सदस्य सक्रिय रहे।

चेम्बूर

साध्वी सोमलता जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण जी के जन्मोत्सव, पट्टोत्सव, दीक्षोत्सव के उपलक्ष्य में अभिवंदन का कार्यक्रम तेरापंथ भवन में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। दर्शन ग्रुप ने मंगल गीत का संगान किया।

सभा अध्यक्ष जुगराज बोहरा ने आगंतुक अतिथियों का स्वागत किया। शासनश्री साध्वी सोमलता जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी ऊर्ध्वारोही दृष्टि संपन्न, आत्म निष्ठ, आप्त वाणी के अधिकृत व्याख्याकार और संत सम्राट के रूप में जन-जन की आस्था के केंद्र बने हुए हैं। आपने कहा कि आचार्यश्री का व्यक्तित्व विशाल और विराट है, जिन्हें किसी उपमा से उपमित नहीं किया जा सकता।

साध्वी जागृतप्रभा जी ने कविता के द्वारा व साध्वी संचितयशा जी ने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी शकुंतला कुमारी जी ने गीत का संगान किया। चेम्बूर ज्ञानशाला, कन्या मंडल, महिला मंडल, सभा ने शानदार ढंग से बी०टी०एम० चैनल के माध्यम से अहिंसा यात्रा की रैली व न्यूज के द्वारा साध्वीश्री जी ने आचार्यश्री महाश्रमण जी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व के बारे में बताया।

सुर मंडल ने मधुर स्वरों में अपनी प्रस्तुति दी। साध्वी रक्षितयशा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया। मुंबई सभा निवर्तमान अध्यक्ष नरेंद्र तातेड़, विमल सोनी, डॉ० प्रकाश सांखला ने अपने विचार रखे। भगवती धाकड़, देवेंद्र बाफना, रमेश धोका, अरविंद धाकड़, मूलचंद लोढ़ा, बालचंद चंडालिया सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे।

सिकंदराबाद

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में आचार्यश्री महाश्रमण जी का १४वाँ पदाभिषेक समारोह, रामकोट, श्री जैन सेवा संघ के प्रांगण में मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि आज के दिन को पदाभिषेक दिवस हम तेरापंथ का भाग्योदय के रूप में मना रहे हैं। आचार्यश्री महाश्रमण जी श्रुत संपन्न, शील संपन्न और श्रद्धा संपन्न आचार्य हैं। आचार्य महाश्रमणजी आज्ञा में निष्ठा रखने वाले आचार्य के रूप में हमारे सरताज के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

साध्वीश्री जी ने समण श्रेणी में की गई अपनी देश-विदेशों की यात्रा के अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि तेरापंथ का हर सदस्य का गुरु के अति अगाध समर्पण होता है। शिक्षा के क्षेत्र में तेरापंथ के आचार्यों ने काफी विकास करवाया है। विदेश की धरती पर समण श्रेणी के रूप में तेरापंथ की फौज द्वारा जैन दर्शन को पढ़ाया जा रहा है।

कार्यक्रम में साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने मंगलाचरण किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष बाबूलाल बैद, तेरापंथ सभा के परामर्शक लक्ष्मीपत बैद, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश भंडारी, टीपीएफ के अध्यक्ष पंकज संचेती, तेमम मंत्री श्वेता सेठिया, तेयुप के उपाध्यक्ष प्रमोद भंडारी सहित अनेक गणमान्यजनों ने अपने विचारों से अभिवंदना की।

श्री जैन सेवा संघ से समागत पदाधिकारियों का तेरापंथ सभा द्वारा साहित्य एवं जैन पट्ट द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभा जी ने किया। आभार ज्ञापन सहमंत्री राकेश सुराणा ने किया।

नोखा

आचार्यश्री महाश्रमण जी तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें आचार्य हैं। स्थिर योग साधना, अनुत्तर साधना, निर्मल संयम, परिश्रम, तनाव मुक्त जीवन, समर्पण, विनय, अनुशासन कौशल अद्वितीय है। आचार्यश्री तुलसी ने तराशा, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने परखा और आचार्य पद सौंप दिया। इस पदाभिषेक दिवस पर शुभकामना व्यक्त करते हुए शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वीवृंद ने गीतिका का संगान किया।

तेयुप द्वारा गीतिका की प्रस्तुति दी। महिला मंडल अध्यक्षा मंजु बैद ने कविता सुनाई।

उपासक अनुराग बैद, उपाध्यक्ष सुनील बैद, इंदरचंद बैद, हर्षित भूरा, महिला मंडल की बहनें, निर्मला सेठिया ने आचार्य महाश्रमण को क्रांतिकारी विभूति बताया।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने रोचक प्रस्तुति दी। महाश्रमण व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर एकांकी भी प्रस्तुत की। संचालन साध्वी प्रभातप्रभा जी ने किया।

● तेरापंथ भवन, महावीर चौक में तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें आचार्यश्री महाश्रमण जी का ५०वाँ दीक्षा दिवस युवा दिवस के रूप में शासन गौरव साध्वी राजीमती जी के सान्निध्य में मनाया गया। शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी का जीवन संपूर्ण युवाओं के लिए आदर्श एवं प्रेरणा स्त्रोत है। उनके जीवन से हमें खाद्य संयम, इंद्रिय संयम, वाणी संयम आदि की शिक्षा लेनी चाहिए। इससे पूर्व साध्वीवृंद द्वारा महाश्रमण अष्टकम् द्वारा मंगलाचरण किया गया।

साध्वी समताश्री जी, साध्वी पुलकितयशा जी, साध्वी प्रभातप्रभा जी, साध्वी विधिप्रभा जी, उपासक अनुराग बैद, डॉक्टर प्रेमसुख मरोठी, सुनील बैद, इंदरचंद बैद ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

महिला मंडल एवं तेयुप द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान किया गया। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कुसुम प्रभा जी ने किया।

श्रावक धर्म कार्यशाला का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में श्रावक धर्म कार्यशाला का आयोजन तेरापंथी सभा ट्रस्ट द्वारा तुलसी धाम स्थित तोदी भवन में किया गया। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जिन शासन के चार अंग हैं—साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका जो सुनता है वह श्रावक है। जो १२ व्रतों का पालन करता है वह श्रावक है। जो श्रद्धावान्, विवेक व क्रियाशील है वह श्रावक है। श्रावक चार प्रकार के होते हैं। मुनिश्री ने कहा कि श्रावक अल्पारंभी व अल्पपरिग्रही होता है। श्रावक आडंबर व प्रदर्शन से दूर रहे।

मुनिश्री ने कहा कि श्रावक को आहर शुद्धि व व्यसन मुक्ति की साधना करनी चाहिए। जीवन में कोई भी प्रकार का नशा न हो। नशा नाश का द्वार है, सामाजिक बुराई है। आहार शुद्धि व व्यसनमुक्ति की साधना करनी चाहिए।

स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हनुमानमल दुगड़, मुख्य न्यासी बाबूलाल गंग, मंत्री बालचंद दुगड़ ने सम्यक्त्व दीक्षा कलैंडर मुनिश्री को भेंट कर विमोचन किया। संयोजक भूपेंद्र शामसुखा ने अपने विचार व्यक्त किए।

आभार ज्ञापन मंत्री बालचंद दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

आचार्य महाश्रमण अभ्यर्थना का आयोजन

मुंबई (कांदिवली)।

शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' के सान्निध्य में आचार्य महाश्रमण अभ्यर्थना का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष विनोद बोहरा ने गुरुदेव के चातुर्मास को ऐतिहासिक बनाने का आह्वान करते हुए गुरुदेव के जन्म दिवस पर मंगलकामना अभिव्यक्त की। कांदिवली तेरापंथ सभा के अध्यक्ष पारसमल दुगड़, मंत्री अशोक हीरण, मलाड तेरापंथ सभा के अध्यक्ष इंदरमल कच्छारा आदि अनेक गणमान्यजनों ने अपने विचार व्यक्त किए।

तेमम की प्रौढ़ बहनों ने गीत का संगान किया। साध्वीवृंद ने गीत प्रस्तुत किया। साध्वी प्रियंवदा जी ने कहा कि शम, सम एवं श्रम की त्रिवेणी का नाम है—महाश्रमण। आचार्यवर में विनम्रता, समर्पण एवं आत्मानुशासन अद्वितीय है। कांदिवली ज्ञानशाला की बालिकाओं ने आचार्यप्रवर को रोचक प्रस्तुति के माध्यम से मंगलभावना प्रेषित की। कार्यक्रम में तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के मंत्री मनीष कोठारी, तेयुप अध्यक्ष नवीन कच्छारा, तेमम की सह-संयोजिका निशा दुगड़ की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन साध्वी प्रियंवदा जी ने किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १४वें महाप्रयाण दिवस के आयोजन

वाशी

साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में राष्ट्रीय संत आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १४वें महाप्रयाण दिवस पर भावांजलि अर्पण समारोह का आयोजन तेरापंथ समाज, वाशी द्वारा किया गया। इस अवसर पर साध्वी पंकजश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी धर्मसंघ के दसवें आचार्य थे, जिनमें बुद्धि, प्रज्ञा, विनय व समर्पण का अद्भुत संयोग था। वह दार्शनिक, कवि, वक्ता, साहित्यकार तो थे साथ में प्रेक्षाध्यान पद्धति के अनुसंधान व प्रयोक्ता भी थे।

आचार्य महाप्रज्ञ जी ने ३५० से अधिक पुस्तकें लिखीं। साध्वी ललिताश्री जी एवं साध्वी सम्यक्यशा जी ने अपने विचारों से महाप्रज्ञ जी को भावांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, वाशी अध्यक्ष विनोद बाफना, मंत्री अर्जुन सोनी, अणुव्रत समिति, मुंबई महामंत्री वनिता बाफना, वरिष्ठ उपासक रजन सियाल, महिला मंडल संयोजिका इंदु बड़ाला ने अपने विचारों के साथ गुरु चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित की।

साध्वी शारदाप्रभा जी ने संचालन किया। आभार ज्ञापन तेयुप अध्यक्ष महावीर सोनी ने किया।

बीड़

मुनि डॉ० पुलकित कुमार जी, मुनि आदित्य कुमार जी, स्थानकवासी श्रमण संघ के उपप्रवर्तक डॉ० गौरव मुनि जी, आयंबिल आराधिका साध्वी प्रफुल्लाजी एवं लोगस्स आराधिका साध्वी उदिता जी के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १४वें महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में स्मरणांजलि समारोह का आयोजन सकल जैन समाज तथा तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में जैन भवन में किया गया।

इस अवसर पर मुनि डॉ० पुलकित कुमार जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जैनाचार्य होते हुए भी जन-जन के आचार्य थे। उनके पास समाधान प्राप्त करने के लिए जनसाधारण व्यक्ति ही नहीं राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जैसे बड़े-बड़े साइंटिस्ट भी उपस्थित होते थे। प्रेक्षाध्यान के द्वारा ध्यान के रहस्य को उन्होंने जनता के सामने प्रस्तुत करते हुए शारीरिक व मानसिक ही नहीं भावनात्मक रूप में भी कैसे महत्त्वपूर्ण है, बताया।

लोगस्स आराधिका साध्वी उदिताजी ने कहा कि महापुरुष महाप्रज्ञ का जीवन गुण सूत्रों पर खरा उतरता है। उन्होंने मानव को मानवता का जीवन जीना सिखाया था। आयंबिल आराधिका साध्वी प्रफुल्लाजी ने कहा कि जिसके पास होता है सद्गुणों का खजाना उसे याद करता है जमाना। आचार्य महाप्रज्ञ विद्वान आचार्य होते हुए भी विनम्र समर्पित और गुरु उपकार के प्रति कृतज्ञ थे।

उपप्रवर्तक गौर मुनि जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने अच्छा रास्ता युग को मार्गदर्शन करते हुए बताया, उनके जीवन में समर्पण, सेवा, श्रद्धा और अनुशासन का बल विशेष था। स्मरणांजलि समारोह का प्रारंभ मुनिश्री के महामंत्रोच्चार से हुआ। मंगलाचरण कन्या मंडल द्वारा किया गया। मुनि आदित्य जी ने गीत एवं वक्तव्य के द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। लोंकाशाह अखबार के संपादक विजयराज बंब, आनंद ऋषि डायग्नोस्टिक सेंटर के प्रमुख गौतमचंद खटेड़, सकल जैन समाज के प्रमुख अशोक लोढ़ा उपासक सुभाष समदरिया, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष लेमकरण समदरिया ने अपने विचार व्यक्त किए।

तेममं की बहनों ने गीत तथा ज्ञानशाला के विद्यार्थियों ने विनयांजलि प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन ओझल समदरिया ने तथा आभार ज्ञापन अतुल मौजकर ने किया।

पूर्वांचल-कोलकाता

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १४वें महाप्रयाण दिवस पर समारोह तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित किया गया।

इस अवसर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि भारतीय ऋषि परंपरा के उज्ज्वल नक्षत्र थे आचार्यश्री महाप्रज्ञ। वे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। वे जैन न्याय के राधाकृष्णन् थे। उन्होंने आगे कहा कि आचार्यश्री कालूगणी के अनेक जन्मों की फलश्रुति है—आचार्यश्री महाप्रज्ञजी। वे आचार्य तुलसी के विचारों के भाष्यकार थे। उन्होंने प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, आगम संपादन, साहित्य, अहिंसा यात्रा आदि अवदान देकर पूरी मानव जाति को उपकृत किया।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के अवदान साहित्य एवं प्रेक्षाध्यान को अपने जीवन का हिस्सा बनाने से ही सही मायने में उस महान व्यक्तित्व को भावांजलि अर्पित की जा सकती है। बालमुनि कुणाल कुमार जी ने गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर तेरापंथी महासभा के मुख्य न्यासी सुरेश गोयल, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हनुमानमल दुगड़, अभातेममं की कार्यसमिति सदस्य रमण पटावरी, तेरापंथी सभा, कोलकाता के अध्यक्ष अजय भंसाली, तेयुप पूर्वांचल के अध्यक्ष राजीव खटेड़ सहित अन्य सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं सदस्यों ने अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए भावांजलि अर्पित की।

आभार तेरापंथी सभा के मंत्री बालचंद दुगड़ व संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

चंडीगढ़

आचार्यश्री महाप्रज्ञ शारीरिक तौर पर हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी वाणी व शब्द जीवन प्राण बनकर हमेशा मानव जीवन का मार्गदर्शन करते रहेंगे। कहने को तो आचार्यश्री महाप्रज्ञ जैन समाज के आध्यात्मिक धार्मिक गुरु थे, लेकिन दूसरे धर्मों और संप्रदायों में भी उनका सम्मान और स्थान बहुत ऊँचा है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ऐसे दार्शनिक और क्रांतिकारी संत थे, जिन्होंने अपने अनुपम, अद्भुत और अद्वितीय विचारों से समाज का मार्गदर्शन किया। यह विचार मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के १४वें महानिर्वाण दिवस पर व्यक्त किए।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मोहम्मद उस्मान लुधियानवी रहे। इसके अलावा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अभय राज सिंह, सूर्यप्रकाश श्यामसुखा, विनोद सुराणा, पवन नवलखा, मंजू, दया आदि ने अपने-अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

मोहम्मद उस्मान लुधियानवी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञजी केवल जैन दर्शन के मनीषी संत नहीं थे, वे अपूर्व व्याख्याकार थे। जिनकी एक-एक कृति सोने में सुहागा का काम करती है।

अमरनगर, जोधपुर

तेरापंथभवन में साध्वी कुंदनप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १४वाँ निर्माण दिवस मनाया गया। तेममं द्वारा महाप्रज्ञ अष्टकम से कार्यक्रम का मंगलाचरण किया गया। सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। महिला मंडल अध्यक्षा सरिता कांकरिया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष सुधा भंसाली ने वक्तव्य द्वारा व सभा से जितेंद्र गोगड ने गीत द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

साध्वी चारित्रप्रभा जी ने कहा कि आज हम तेरापंथ धर्मसंघ के ओजस्वी और तेजस्वी आचार्य की पुण्यतिथि मनाने एकत्रित हुए हैं। उनके अखंड व्यक्तित्व के प्रमुख बिंदु हैं—विनम्रता, सहजता, सरलता।

साध्वी किरणयशा जी ने कहा कि जो व्यक्ति अपने गुरु के प्रति समर्पित रहता है, वह सच्चा शिष्य होता है और उत्तरोत्तर प्रगति कर सकता है। साध्वी गौतमप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

साध्वी विद्युतप्रभा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी का जीवन आश्चर्यों से भरा हुआ था। जिन्होंने आचार्यश्री कालूगणी जी से संयम स्वीकार किया एवं आचार्यश्री तुलसी को विद्यागुरु के रूप में प्राप्त किया।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने कहा कि आज हम २१वीं सदी में महान दार्शनिक की पुण्यतिथि मना रहे हैं। आचार्य महाप्रज्ञ जी का व्यक्तित्व विशाल ज्ञानकोश जैसा है।

उस महापुरुष के महाप्रयाण दिवस पर यही मंगलकामना करते हैं कि उनके जीवन से प्रेरणा लें आत्मा के उत्थान का संकल्प करें। आभार ज्ञापन जगदीश धारीवाल द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री महावीर चोपड़ा ने किया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा, सरदारपुरा, तेयुप, महिला मंडल, अणुव्रत समिति आदि के सदस्यों की उपस्थिति रही।

बीदासर

बीदासर केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १४वाँ महाप्रयाण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि महाप्रज्ञ वह बनता है जो कषायों का उपशम करता है, गुरु के प्रति सर्वात्मना समर्पित होता है, प्रसन्नता के रसायन का सेवन करता है, प्रतिक्रिया मुक्त जीवन जीता है। टमकोर के छोटे से गाँव में जन्म नत्थू अज्ञ थे। वे अज्ञ से विज्ञ बने, विज्ञ से विशेषज्ञ, प्रज्ञ और फिर महाप्रज्ञ बने।

साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि वे स्वयं भी टमकोर की होने से गौरव का अनुभव करती हैं। शासनश्री साध्वी साधनाश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने विनम्र और योग्य शिष्य बनकर गुरु के हर निर्देश को क्रियान्वित किया तो एक महान गुरु के रूप में संघ को नए अवदान और नई ऊँचाइयाँ भी दी।

साध्वी संघप्रभा जी ने कहा कि महाप्रज्ञजी एक योग्य, योग्यतर और योग्यतम शिष्य थे। इसीलिए आचार्यश्री तुलसी ने कहा कि मेरे जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि है—आचार्य महाप्रज्ञ। साध्वी ऋजुप्रभा जी ने कहा कि पुरुषार्थ और प्रतिभा की बेजोड़ मिसाल है—आचार्यश्री महाप्रज्ञ।

साध्वी विमलप्रभा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का जीवन बिंदु से सिंदु की यात्रा है और उन्हें सिंदु बाने वाले थे आचार्यश्री तुलसी। साध्वीवृंद ने गीत की प्रस्तुति दी। महिला मंडल की अध्यक्षा चंदा देवी गिड़िया, एकता बैंगानी, विमल दुगड़, नवदीप बैंगानी ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का मंगलाचरण ज्ञानशाला के बच्चों ने अष्टकम् से किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी गीतार्थप्रभा जी ने किया।

अमराईवाडी

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १४वें महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में भक्ति संध्या का कार्यक्रम तेरापंथ भवन में रखा गया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ साध्वीश्री जी ने कार्यक्रम की शुरुआत करवाई।

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी की प्रेरणा से आज के दिन भाई-बहनों ने उपवास, एकासन और छोटे-बड़े त्याग किए।

साध्वी संवेगप्रभा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का व्यक्तित्व विलक्षण था। आपके अनेकों अवदान के बारे में बताते हुए प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के बारे में बताया।

साध्वी नंदिताश्री जी ने छोटे-छोटे अनेकानेक घटना प्रसंगों के द्वारा गुरु का जीवन-दर्शन प्रस्तुत किया। गुरु का गुणगान करते हुए कहा कि आपका व्यक्तित्व कर्तृत्व एवं नेतृत्व अपूर्व था। आपने धर्मसंघ को ही नहीं, इस देश को ही नहीं, पूरे विश्व में जो अवदान दिया वह है जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान। जिसका आज लाखों लोग लाभ ले रहे हैं।

साध्वी तरुणप्रभा जी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आपका व्यक्तित्व, कर्तृत्व एवं नेतृत्व गजब था। एक बार जो व्यक्ति आपके चरणों में आ जाता वो आपका हो जाता था।

सभी साध्वीश्री जी ने शासनश्री साध्वी सरस्वती जी द्वारा रचित गीत द्वारा सुमन अर्पित किए। भाई-बहनों ने गीत, भाषण एवं कविता के द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया ने एवं आभार ज्ञापन सभा के पूर्व अध्यक्ष दिनेश चंडालिया ने किया।

✦ *गुरु ज्ञानदाता होते हैं। वे संस्कार भरते हैं, अनुशासन करते हैं। जिनसे कुछ प्राप्त हुआ, उनके नाम को छिपाएँ क्यों?*

– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ *प्रवृत्ति को छोड़ना कठिन है, परंतु प्रवृत्ति में होने वाली आसक्ति को छोड़ा जा सकता है। फिर प्रवृत्ति तुम्हारी आत्मा को मलिन बनाने वाली नहीं बनेगी।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

(२२) शरीर-गण-उपधि-भक्तपान कषायाणां विसर्जनं व्युत्सर्गः।।
(२३) ध्यानाय शरीर-व्युत्सर्गः।।
(२४) विशिष्टसाधनायै गण-व्युत्सर्गः।।
(२५) लाघवाय उपधि-व्युत्सर्गः।।
(२६) ममत्वहानये भेदज्ञानाय च भक्तपान-व्युत्सर्गः।।
(२७) सहजानंदलब्धये कषाय-व्युत्सर्गः।।

(२२) शरीर, गण, उपाधि, भक्तपान और कषाय का विसर्जन करने को व्युत्सर्ग कहा जाता है।

(२३) ध्यान के लिए शरीर का व्युत्सर्ग किया जाता है। उसे त्यक्त, शिथिल, निश्चेष्ट और निक्रिय कर देने पर उसका भान नहीं होता और तनाव समाप्त हो जाता है।

(२४) विशिष्ट साधना के लिए गण का व्युत्सर्ग किया जाता है। जो विशिष्ट ज्ञान, दर्शन और चारित्र संपन्न हों, विशिष्ट शरीर-बल संपन्न हों तथा गुरु द्वारा अनुज्ञात हों वे ही व्यक्ति अकेले रहकर विशिष्ट साधना करने के अधिकारी हैं।

(२५) लाघव (हल्कापन) के लिए उपाधि—वस्त्र आदि उपकरणों का त्याग किया जाता है। बाह्य-उपाधि जितने अधिक व्यक्त होते हैं, उतनी ही लघुता बढ़ती है और वे जितने अधिक होते हैं, उतना ही भार बढ़ता है।

(२६) ममत्व की हानि तथा भेदज्ञान के लिए आहार-पानी का त्याग किया जाता है। शरीर जो है, वह मैं नहीं हूँ और मैं जो हूँ, वह शरीर नहीं है—ऐसा भेदज्ञान होने से ममत्व की हानि होती है और ममत्वहीन होने से आत्मशक्ति का विकास होता है। भक्त-पान का त्याग उसके विकास में बहुत सहायक है।

(२७) सहज आनंद या वीतराग भाव की प्राप्ति के लिए कषाय का त्याग किया जाता है। कषाय के द्वारा आत्मा का सहज आनंद विकृत हो जाता है। उसकी प्राप्ति कषाय दूर होने पर ही होती है।

व्युत्सर्ग

विसर्जन साधना का रहस्य है। जो विसर्जन के महत्त्व को नहीं जानता, वह साधना के मर्म को नहीं जानता। अहंकार और ममकार—ये दोनों साधना के बाधक तत्त्व हैं। साधक की पहली कसौटी है—अहंकार और ममकार से मुक्त होना।

शरीर-व्युत्सर्ग

ममकार का मूल बीज शरीर है। साधना की पहली कक्षा है—शारीरिक ममत्व का विसर्जन। शारीरिक ममत्व को विसर्जित किए बिना शरीर के भीतर अवस्थित चेतन सत्ता की अनुभूति नहीं हो सकती। दीपशिखा पर जैसे ढक्कन पड़ा है, उसी प्रकार शरीर और उसके सहचारी मन और प्राण के द्वारा चैतन्य की शिखा ढकी पड़ी है। शरीर की चंचलता और ममत्व का जैसे-जैसे विसर्जन होता है, वैसे-वैसे हमारी उन्मुखता चैतन्य की ओर होती है। ध्यान का लक्ष्य है चैतन्य की उपस्थिति का सतत अनुभव करना। उसके लिए शरीर की चंचलता और ममत्व, ये दोनों त्याज्य हैं।

गण-व्युत्सर्ग

साधक अकेले में रहे या संघ में? इस प्रश्न का भगवान् महावीर ने अनैकांतिक उत्तर दिया है। भगवान् ने कहा—साधना गाँव में भी हो सकती है और अरण्य में भी हो सकती है और वह गाँव में भी नहीं हो सकती और अरण्य में भी नहीं हो सकती। जिस व्यक्ति में आत्माभिमुखता की तीव्रता नहीं है, उसके लिए अरण्य भी गाँव जैसा है और जिस व्यक्ति में आत्माभिमुखता की तीव्रता है, उसके लिए गाँव भी अरण्य जैसा है। इसी प्रकार आत्माभिमुख व्यक्ति संघ में रहकर भी अकेला रह सकता है। वह अकेले में रहकर भी वैचारिक अकेलेपन का अनुभव नहीं कर पाता।

तत्त्व-विचार की भूमिका में उक्त चिंतन की यथार्थता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। किंतु मनुष्य की कठिनाई है कि वह पहले ही चरण में तत्त्व-चिंतन और व्यवहार की भूमिका में सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता। संघीय जीवन में व्यावहारिक कठिनाइयाँ अनायास ही उभर आती हैं। उसमें विभिन्न रुचियाँ, संस्कार, चिंतन और मानदंड होते हैं। वे सामान्य साधना में विक्षेप डालते भी हैं या नहीं भी डालते। किंतु उसकी विशिष्ट प्रक्रियाओं व प्रयोगों में वे साधक नहीं होते। इसीलिए साधना की विशिष्ट प्रक्रियाओं का अभ्यास करने वाला व्यक्ति संघीय जीवन से मुक्त होकर चलता है।

दूसरों के लिए कुछ करना बहुत बड़ी बात है और केवल अपने लिए करना स्वार्थ है, इस सत्य को अस्वीकृति नहीं दी जा सकती। किंतु इस तथ्य पर भी आवरण नहीं डाला जा सकता कि संघमुक्त साधना करने का संबंध प्रयोजन से नहीं, पद्धति से है। एकांत में साधना करने वाले का प्रयोजन अपने लिए और दूसरों के लिए इन दोनों की समष्टि में व्याप्त है। वह केवल स्वार्थ ही नहीं है, किंतु जैसे एक विद्यार्थी, कवि, लेखक या वैज्ञानिक को अपने कार्य के लिए शांत-नीरव स्थान की अपेक्षा होती है, वैसे ही आत्मानुभूति की गहराई में पैठने वाले साधक को एकांत की अपेक्षा होती है। शांत सरोवर में कोई ढेला न फेंके इस दृष्टि से उसे अकेला रहना आवश्यक होता है। प्रायोगिक काल में अकेलेपन की उपयोगिता समझ में आती है। सत्य उपलब्ध होने पर संघ या अकेलेपन का कोई भेद नहीं होता।

उपधि और भक्तपान व्युत्सर्ग

पदार्थों का संग्रह और उनका ममत्व—ये दोनों अंतरानुभूति के विघ्न हैं। पदार्थ स्वतः विघ्न नहीं हैं किंतु उनका संग्रह लोभ के कारण होता है, इसलिए वह विघ्न हो जाता है। ममत्व के बिना संग्रह होता ही नहीं और जहाँ ममत्व होता है वहाँ अंतरानुभूति का स्थान बाह्यानुभूति ले लेती है। उस स्थिति में साधक की चेतना मूर्च्छा से बोझिल बन जाती है। मूर्च्छा का विसर्जन अर्थात् संग्रह का विसर्जन। यह विसर्जन की प्रक्रिया आगे बढ़ते-बढ़ते पदार्थों के पूर्ण त्याग तक पहुँच जाती है। भोजन के बिना शरीर का निर्वाह नहीं हो सकता, किंतु इस प्रक्रिया में उसका भी आंशिक त्याग प्राप्त होता है और एक बिंदु आने पर सदा के लिए भोजन का विसर्जन कर दिया जाता है। दैहिक ममत्व का विसर्जन करने के लिए ऐसा करना बहुत आवश्यक है।

ममत्व-विसर्जन हो जाए, फिर संग्रह-विसर्जन की क्या आवश्यकता है? इस चिंतन का बाह्य जितना सुंदर है, उतना अंतस् यथार्थ नहीं है। ममत्व-विसर्जन की कसौटी असंग्रह है। संग्रह है और ममत्व नहीं है, यह सामान्य स्थिति नहीं है। संग्रह नहीं होने पर ममत्व नहीं होता, यह व्याप्ति भी नहीं है। इन दोनों रेखाओं के मध्य में जो देखा जा सकता है, वह इतना ही है कि ममत्व-विसर्जन के लिए संग्रह का विसर्जन किया जाए और संग्रह-विसर्जन की यथार्थता के लिए ममत्व-विसर्जन का अभ्यास किया जाए।

क्या कोई शरीरधारी ऐसा हो सकता है, जो शरीर को धारण करे और उसकी माँग को पूरा न करे? भोजन शरीर की आवश्यकता माँग है। उसे पूरा करना साधक के लिए भी अनिवार्य है। एक ओर शरीर की माँग को पूरा करने का प्रश्न है तो दूसरी ओर उसके ममत्व (देहाध्यास) के विसर्जन का प्रश्न है। शारीरिक ममत्व का विसर्जन करने के लिए यह आवश्यक है कि साधक शरीर की अपेक्षा को पूरा करे, किंतु जितनी अपेक्षा हो उसे अविकल रूप से पूरा न करे। यह देह और आत्मा के भेदज्ञान की ओर प्रगति होने की व्यावहारिक कसौटी है।

कषाय-व्युत्सर्ग

अनुकूल स्थिति और इष्ट वस्तु का योग होने पर मनुष्य को सुख की अनुभूति होती है। प्रतिकूल परिस्थिति और अनिष्ट का योग होने पर उसे दुःख का अनुभव होता है। साधारण मनुष्य इसी सुख-दुःख के चक्र में परिभ्रमित रहता है। सुख के आगे आनंद नाम की कोई वस्तु है, यह प्रश्नचिह्न भी उसके मन में नहीं उभरता। प्रतिकूल परिस्थिति और अनिष्ट के योग में भी मनुष्य के आनंद का प्रवाह अविच्छिन्न रह सकता है, यह कल्पना सामान्यतः नहीं हो सकती। किंतु आनंद उसी स्थिति का नाम है जो बाह्य के संयोग या वियोग के आधार पर घटित नहीं होती।

हर मनुष्य के अंतस् की गहराई में आनंद की असीम धारा प्रवाहित होती है किंतु प्राणिक और मानसिक आवरणों से वह आच्छन्न है। मोह (कषाय) की राख से उसके अस्तित्व की लौ ढंकी हुई है, इसलिए उसका होना नहीं होने जैसा है।

ध्यान आदि के अभ्यास से प्राणिक और मानसिक आवरण का विघटन करना काफी प्रयत्न-साध्य है। आत्मानुभूति की गहराई होने पर प्राणिक और मानसिक आवरण विच्छिन्न हो जाते हैं। आत्मानुभूति की गहराई जब निरंतर हो जाती है, उस समय मोह की ग्रंथि भी खुल जाती है और मनुष्य सहज आनंदानुभूति के रस में परिप्लावित हो जाता है।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(८) **लब्ध्वा मनुष्यतां धर्मं, शृणुयाच्छ्रद्दधीत यः।**
वीर्यं स च समासाद्य, धुनीयाद् दुःखमर्जितम्।।

पुरुषार्थ

(क्रमशः) **जानन्ति केचिद् न तु कर्त्तुमीशाः, कर्त्तुं क्षमा ये न च ते विदन्ति।**
जानन्ति तत्त्वं प्रभवन्ति कर्त्तुं, ते केऽपि लोके विरला भवन्ति।।

सत्य की दिशा में वीर्य को प्रवाहित करना अतिदुष्कर है। गीतों में भी कहा है–**'मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद् यतते सिद्धये'**–हजारों मनुष्यों में से कोई एक सिद्धि के लिए प्रयत्न करता है। कुछ लोग जानते हैं किंतु आचरण करने में अक्षम होते हैं। कुछ लोग करने में समर्थ हैं किंतु जानते नहीं हैं। तत्त्व को जानते हों और आचरण के लिए भी प्रयत्न करते हों–ऐसे व्यक्ति संसार में विरल होते हैं। गलत दिशा में चलने के लिए अनेक सहयोगी और मित्र मिल सकते हैं, किंतु सही दिशा-सहायक मिलना कठिन होता है। घेरे से बाहर निकलना बड़ा जटिल है और फिर पुरुषार्थ के मध्य में अनेक अड़चनें खड़ी हो जाती हैं। कुछ व्यक्ति की अपनी दुर्बलता होती है, बाहर से सहयोग भी वैसा मिल जाता है। अपने बने-बनाए समस्त घरों और ममत्व को जलाने की क्षमता हो तभी यह संभव है। कबीर ने कहा है–

कबीरा खड़ा बाजार में, लिए लुकाठी हाथ।
जो घर जाले आपना, चलो हमारे साथ।।

जो अपने घर को जला सकता है वह हमारे साथ आए। क्राइष्ट ने कहा है–जो अपने को बचाता है वह खो देता है और जो अपने को खोने के लिए तैयार है वह पा लेता है। सत्य के मार्ग में मनुष्य में मुख्य विघ्न हैं–आलस्य, इंद्रिय-विषयों के सेवन में रस और कर्तव्य के प्रति उदासीनता। पुरुषार्थ ही मार्ग को सरल और मंजिल को सन्निकट करता है।

इस चतुष्टयी का सम्यक् अवबोध अपेक्षित है और मनुष्य जीवन में जिस परम सत्यता का बीज छिपा है उसे प्रकट करना भी। बीज वृक्ष बने इसी में जीवन की सफलता निहित है।

(९) **शोधिः ऋजुकभूतस्य, धर्मः शुद्धस्य निष्ठति।**
निर्वाणं परम याति, धृतसिक्त इवानलः।।

शुद्धि उसे प्राप्त होती है जो सरल होता है। धर्म उसी आत्मा में ठहरता है, जो शुद्ध होती हो। जिस आत्मा में धर्म होता है, वह घी से सींची हुई अग्नि की भाँति परम दीप्ति को प्राप्त होती है।

साधु कौन होता है? महावीर कहते हैं–'मैं उसे साधु कहता हूँ जो सरल, सीधा होता है, अनासक्त होता है, ऊर्जा को स्वयं के जागरण में नियोजित करता है।' साधु और वक्र–ये दोनों एक चौखटे में नहीं बैठते। सरलता शुद्धि का पहला चरण है। असरल होकर आदमी ने कुछ पाया नहीं, खोया है। लोक और परलोक दोनों उसके हाथ से निकल जाते हैं। बुद्ध ने कहा है–समुद्र को कहीं से चखो वह खारा ही खारा है। ठीक साधु को किसी तरह कहीं से देखो, ऋजुता के सिवाय और कुछ नहीं। धर्म का अवतरण सरलता में होता है। जैसे ही व्यक्ति सरल बनता है कि धर्म का मेघ बरसने लगता है, धर्म विराजमान हो जाता है, दिव्यता प्रकट हो जाती है।

लाओत्से ने कहा है–'संत फिर से बच्चे होते हैं। बच्चे-बच्चे होते हैं किंतु अज्ञान के कारण। जैसे ही बड़े होते हैं–बचपन चला जाता है। फिर वह भोलापन, सरलता नहीं रहती। उस पर बुद्धि सवार हो जाती है, भय सवार हो जाता है और वहाँ जीवन का बहाव खत्म हो जाता है। सरलता बहाव है। बहाव में पवित्रता है, वह स्थिरत्व में नहीं होती। वर्तमान का जीवन नष्ट हो जाता है। संत फिर से बच्चे हो जाते हैं, अज्ञानपूर्वक नहीं, ज्ञानपूर्वक। वे अपने को इतना स्वच्छ कर लेते हैं कि अब कोई चीज छिपाने जैसी रहती ही नहीं और अतीत और अनागत से मुक्त होकर प्रतिक्षण में जीना प्रारंभ कर देते हैं।

हर्मन हेस ने कहा है–'जीवन बोध से शून्य सामान्य जन और जीवन की समस्त ज्ञान गरिमा से संपन्न रागातीत परमहंस के मुख-मंडल पर खिलने वाले निश्छल हास्य में कोई अंतर नहीं होता।' **(क्रमशः)**

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

कर्म बोध

प्रकृति व करण

प्रश्न ८ : नाम कर्म बंध के क्या कारण हैं?
उत्तर : शुभ नाम कर्म बंध के चार कारण हैं–
(१) काय ऋजुता–दूसरों को काया से न ठगना।
(२) भाव ऋजुता–दूसरों को मन से न ठगना।
(३) भाषा ऋजुता–दूसरों को वचन से न ठगना।
(४) अविसंवादन योग–कथनी-करनी की समानता।
इनके विपरीत क्रम से अशुभ नाम कर्म बंध के हेतु बन जाते हैं। **(क्रमशः)**

उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

श्रावक श्री बहादुरमलजी भंडारी

किसनमलजी अपने दल के साथ लाडनूं पहुँचे। लोगों ने प्रतिरोध की तैयारी की। किसनमलजी भंडारी ने आगे बढ़कर अपना परिचय दिया। उससे सभी लोग पूर्णतः आश्वस्त हो गए। किसनमलजी ने जयाचार्य के दर्शन किए। उन्होंने जोधपुर में घटित घाटना-चक्र के विषय में पूरी अवगति प्रदान की। बाहर एकत्रित हुई जनता को भी सारी स्थिति बतलाई। संकट के बादल छंट जाने से सभी आकृतियों पर एक सुखद आह्लाद की लहर दौड़ गई।

कुछ दिनों के पश्चात् बहादुरमलजी भंडारी ने लाडनूं में जयाचार्य के दर्शन किए। आचार्यश्री ने उनकी सामयिक सेवा की भूरि-भूरि प्रशंसा की और उसके लिए उन्हें पुरस्कृत करना चाहा। उन्होंने प्रसन्न मुद्रा में उन्हीं से पूछा–'इस सेवा का तुम्हें क्या पारितोषिक दिया जाए? यदि तुम साधु जीवन में होते तो युवाचार्य पद देना भी इसके लिए कम ही होता।'

भंडारी ने अत्यंत नम्रता से निवेदन किया–'साधु जीवन का सामर्थ्य मरे में नहीं है। इस साधारण-सी सेवा के लिए आप इतना फरमा रहे हैं, वह तो आपकी कृपा है।' जयाचार्य ने फिर भी उन्हें कुछ देना चाहा तो उन्होंने आगामी चातुर्मास जोधपुर में कराने की प्रार्थना की। जयाचार्य ने उसे तत्काल स्वीकार कर लिया और आगामी सं० १९२१ का चातुर्मास जोधपुर में किया।

क्षायक सम्यक्त्व

एक व्यक्ति किसी गापव में पटवारी था। भंडारीजी के यहाँ उसका आना-जाना था। उसने तेरापंथी साधु-साध्वियों का वहाँ भारी आदर होते देखा तो मन ही मन जल-भुन गया। तेरापंथ के प्रति उसके मन में बहुत विद्वेष था। एक बार उसने भंडारीजी से कहा–'आप इन साधु-साध्वियों का इतना आदर करते हैं, परंतु ये तो शिथिलाचारी होते हैं। मैं जिस गाँव में हूँ, वहाँ एक सिंघाड़ा आया था। गाँव में उन्हें प्रासुक पानी नहीं मिला, तब वहाँ से विहार कर गए। मैंने स्वयं देखा कि गाँव के बाहर कुएँ पर उन्होंने पानी लिया और पीकर आगे चल दिए।'

भंडारीजी ने कहा–'तो फिर वे तेरापंथी साधु नहीं हो सकते। किसी अन्य संप्रदाय के साधुओं को तुमने भ्रमवश तेरापंथी समझ लिया है।' पटवारी बोला–'मैंने उनसे पूछा था। उन्होंने स्वयं को तेरापंथी साधु ही बतलाया।' भंडारी जी ने कहा–'अप्रासुक पानी लेते तथा पीते समय देख लिए जाने पर उन्होंने अपने बचाव के लिए तेरापंथी का नाम ले लिया है।' पटवारी ने कहा–'मैं सच कह रहा हूँ, आप विश्वास करिए।' भंडारीजी बोले–'मुझे पक्का विश्वास है कि तुम जो कह रहे हो उसमें राईभर भी सत्य नहीं है।'

कालांतर में किसी व्यक्ति ने जयाचार्य को उक्त बात सुनाई, तो उन्होंने फरमाया–'ये क्षायक सम्यक्त्व के लक्षण हैं, अन्यथा इतना प्रगाढ विश्वास हो पाना कठिन है।'

अनुश्रुति में तो यहाँ तक प्रसिद्ध है कि बहादुरमलजी ने तीर्थंकर गोत्र का बंधन कर लिया था। घटना सं० १९२८ की बतलाई जाती है। उस वर्ष जयाचार्य का चातुर्मास जयपुर में था। एक दिन रात्रिकाल में उन्हें किसी दिव्य वाणी से यह सूचना मिली कि उनके तीन श्रावकों ने तीर्थंकर गोत्र का बंधन किया है। उनमें प्रथम भैंरूलालजी सींधड़ (जयपुर) ने गुरु-भक्ति में, द्वितीय ताराचंदजी ढीलीवाल (चित्तौड़) ने पात्रदान में तथा तृतीय बहादुरमलजी भंडारी (जोधपुर) ने धर्म-प्रभावना में उत्कृष्ट रसायन आने से यह महत्ता प्राप्त की है।

अंतिम समय

बहादुरमलजी के लिए जयाचार्य का युग सांसारिक और धार्मिक दोनों ही दृष्टियों से पूर्ण सक्रियता और विकास का युग रहा। उनके दिवंगत होने के पश्चात् उन्हें भी अपना वार्धक्य बार-बार याद आने लगा। शरीर की क्रमिक शिथिलता उनके मानस को निरंतर प्रभावित करती चली गई। सत्तरवें वर्ष-प्रवेश के बाद तो उन्हें ऐसा आंतरिक भान होने लगा कि मानो अब दूसरा किनारा आने ही वाला है। उन्होंने अपनी अंतःप्रेरणा के संकेतों को लक्षित किया और अपने बड़े पुत्र किसनमलजी को सं० १९४१ के मर्यादा महोत्सव पर मघवागणी के दर्शन करने हेतु लाडनूं भेजा। उन्होंने प्रार्थना करवाई कि आगामी चातुर्मास आप जोधपुर करवाने की कृपा करें ताकि मुझे इस वार्धक्य में सेवा का अंतिम अवसर प्राप्त हो सके। **(क्रमशः)**

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
22 - 28 मई, 2023

✦ *हमारी दुनिया में अज्ञान कष्ट है, अभिशाप है तथा ज्ञान वरदान है। अज्ञानी अपने हित और अहित का विवेक नहीं कर पाता।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीप्रमुखाश्री जी के मनोनयन दिवस पर विशेष

अर्हम्

● **साध्वी नीतिप्रभा** ●

मंगल गावां हां
ओ अवसर अनमोलो आयो रे। मंगल गावां हां।
अनमोलो आयो है कि खुशियाँ री। सौगात लायो रे।।

अमल धवल ओ संघ काफिलो, आनंद खुश मनावै रे।
विरुदावलिया गाँवें मन वाणी, मधुरी तान सुनावै रे।। मंगल।।

चयन दिवस की अगवानी में ऊगी भोर निराली रे।
सर्दी में आं धूप जिसी, छाई खुशहाली रे।। मंगल।।

प्रमुखाश्री जी रे चरणां में श्रद्धा (रा) फूल महके रे।
डायमन नगरी में ये तो, श्वेत कोयलिया चहके रे।। मंगल।।

अजब-गजब रा पारखी (गण) गणपति है आपां रां रे।
तलहटी में जा रतन निकाल्यों, निरखां आपा रे।।

देह निरोगी रहे आपरी, क्षण-क्षण भावना भावां रे।
युग-युग पावां थारी शासना, सपन सजावा रे।।
युग-युग पावां थारी शासना, उत्सव सदा मनावा रे।।

म्हैं बैठया हां खैराकलां में दूर स्यूं घणां बधावा रे।
मनड़ों मारो गुजरात में, म्हें दर्शन चावां रे।।

चलो देखन ने---

आया चयन दिवस पावन

● **साध्वी सोमप्रभा** ●

आया चयन दिवस पावन।
खुशियों का बरसा है सावन, कण-कण में नव स्पंदन।।

तुलसी महाप्रज्ञ गुरुवर की कृपा अनोखी पाई।
शासन माता की सन्निधि में सोई शक्ति जगाई।
नूतन चिंतन मंथन द्वारा पौर-पौर रोशन।।

महाश्रमण गुरुवर के दिल में पूरा विश्वास जमाया।
साध्वीप्रमुखा का पद देकर गुरु ने मान बढ़ाया।
सरदारशहर के प्रांगण में मनभावन मनोनयन।।

जागरूकता विनयशीलता नियमित दिनचर्या सारी।
व्यवहार कुशलता सरस्वती रूपा तब महिमा है भारी।
अप्रमत्त बनकर करते हैं, गुरु दृष्टि आराधना।।

अद्भुत ज्ञान पिपासा सीमित आशा सीमित भाषा।
युग युगांत तक करो शासना मन की है अभिलाषा।
रजनीगंधा फूलों ज्यों यह महका गण गुलशन।।

दूर-दूर हम बहुत दूर है ढेरों देते बंधाई।
श्रम बूंदों से सति शेखरे करते गण सिंचाई।
चयन दिवस पर अर्पित चरणों भावों का शुभ चंदन।।

शासनश्री की मनोभावना पायें जल्दी दर्शन।
हम सबकी है मनोभावना पायें जल्दी दर्शन।।

लय : धर्म की लौ---

अर्हम्

● **साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा** ●

गूंज रही है पुण्यऋचाएँ।
नव उमंग संग आज हम, मनोनयन का पर्व मनाएँ।।

जिस पौधे को गुरु तुलसी ने निज पर से इस गण में रोपा।
महाप्रज्ञ ने नव सृजन कर उसको पुनरपि गण को सोंपा।
महाश्रमण गुरुवर करुणाकर उसका नूतन रूप दिखाए।।

निज पौरुष से भाग्य गढ़ा है, नहीं अलसता तुम्हें सुहाती।
रात-दिवस अध्यात्म रश्मि ले, जलती अविरल जीवन बाती।
सहन समर्पण गुरु चरणों में, गुरु सेवा आनंद मनाएँ।।

धैर्य तुम्हारा अनुगत साथी, नस-नस में विश्वास भरा है।
कर्म निर्जरा लक्ष्य सामने, पल-पल में उल्लास भरा है।
पाकर शुभ संरक्षण तेरा, खुले प्रगति की नई दिशाएँ।।

दीक्षा दिन पर आर्यप्रवर ने दिया संघ को यह वरदान।
सुनकर यह उद्घोष सुहाना मुख-मुख परछाई मुस्कान।
करें कामना गुरु सन्निधि में, जन्म सदी का अवसर पाए।।

त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का समापन

पूर्वांचल-कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्त्वावधान में तेरापंथ सभा पूर्वांचल द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का समापन तुलसी वाटिका में हुआ। जिसमें अच्छी संख्या में लोग उपस्थित थे। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि प्रत्येक आत्मा पारस है। किंतु मोहावरण के कारण उसका स्वरूप प्रकट नहीं हो रहा है। स्वरूप को प्रकट करने का माध्यम है ध्यान। ध्यान भोग से योग, राग से विराग, विभाग से स्वभाव तथा असंयम से संयम की यात्रा है। ध्यान से प्रमोद भावना, करुणा, मैत्री, मध्यस्थता का विकास होता है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि आज प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का समापन नहीं शुभारंभ हो रहा है। नियमित ध्यान साधना करने से वृत्तियों में बदलाव आता है, सम्यक् दृष्टिकोण का विकास होता है। सभी संभागियों, व्यवस्थापकों और मुख्य प्रशिक्षक के प्रति आध्यात्मिक शुभकामना। इस अवसर पर मुख्य प्रशिक्षक विमल गुनेचा ने कहा कि प्रेक्षाध्यान की साधना से जीवन में बदलाव आता है।

शिविर में सरला दुगड़, सीमा पुगलिया, कपिला सिंघी, भारती संचेती, वीणा पुगलिया, अनुपम गुप्ता, मोनिका जैन, पलक चपलोत, अंजु दुगड़, सरला बच्छावत, विद्या बैद आदि ने अपने-अपने अनुभव सुनाए। कार्यक्रम का संचालन सरला गंग ने और आभार सुधा जैन ने किया। कार्यशाला में ७५ संभागी थे। मुख्य प्रशिक्षक का सभा द्वारा सम्मान किया गया और संभागियों को प्रमाण-पत्र दिए गए। कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्वांचल सभा व अवनी के कार्यकर्ताओं का विशेष योगदान रहा।

अर्हम्

● **मुनि कमल कुमार** ●

भैक्षव गण का विश्व में, जगह जगह सम्मान।
समय-समय पर हैं मिले शास्ता प्रज्ञावान।।

साध्वी प्रमुखा चयन का पूर्ण हुआ है वर्ष।
वर व्यक्तित्व निहारकर चारतीर्थ में हर्ष।।

श्री तुलसी महाप्रज्ञ का प्राप्त किया विश्वास।
महाश्रमण गुरुदेव ने बना दिया इतिहास।।

करते मंगलकामना रहें निरामय आप।
विदुषी प्रमुखा जी मिलीं जन-जन के मन छाप।।

मधुरभाषिणी तपस्विनी सबसे सद्व्यवहार।
विश्रुत विभा जी का करें स्वागत बारंबार।।

समणी से साध्वी बनी अनुभव अपरंपार।
धी धृति करुणा आदि की हैं अखूट भंडार।।

करणीय हर कार्य का करें हमें संकेत।
जिससे हम सब हर समय रहें विशेष सचेत।।

अमृत महोत्सव सुगुरु का है सबमें उल्लास।
नव्य भव्य हर कार्य हो ऐसा रहे प्रयास।।

धन्य हो गए हम सभी पाकर अनुपम संघ।
गण प्रभावना में सतत् बढ़ता रहे उमंग।।

ज्ञानशाला संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन

अमरनगर, जोधपुर।

तेरापंथी सभा, सरदारपुरा के तत्त्वावधान में सरदारपुरा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों के लिए एक दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन, अमरनगर में किया गया।

साध्वी कुंदनप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित इस शिविर में लगभग ८० बच्चों ने भाग लिया। शिविर का शुभारंभ साध्वी चारित्रप्रभा जी द्वारा नमस्कार मंत्र के उच्चारण से हुआ।

साध्वीश्री ने कहानी के माध्यम से नवकार मंत्र का महत्त्व बताया। साध्वीश्री जी ने प्रयोग के माध्यम से महाप्राण ध्वनि एवं ज्ञान मुद्रा का लाभ बताया।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने बच्चों को बताया कि व्यवहार का जीवन में क्या महत्त्व है और कैसा व्यवहार होना चाहिए। साध्वीश्री जी ने बताया कि बाल पीढ़ी देश का भविष्य है और किस प्रकार वे संस्कार से सुसज्जित होकर परिवार, समाज और देश की शान बढ़ा सकते हैं।

डॉ० मयूरी जैन ने बताया कि दाँतों की कैसे देखभाल करें, और कैसे स्वस्थ रहें। प्रशिक्षिका मीनाक्षी ने योग के बारे में बताया। दिलखुश तातेड़ एवं प्रियंका बांठिया ने ब्रेड एवं कागज से कैसे कलाकृति बन सकती है, उसके बारे में बताया।

कार्यक्रम का संचालन समता सालेचा ने किया। सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, ज्ञानशाला संयोजक बी०आर० जैन, महिला मंडल अध्यक्षा सरिता कांकरिया व तेयुप, सरदारपुरा से निरंजन तातेड़ की उपस्थिति रही।

अक्षय तृतीया के विविध आयोजन

जुहू (मुंबई)

अक्षय तृतीया के अवसर पर साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि जुहू बीच टुलिप स्टार लेंड पर आप सभी अपने आपको नए रूप में अनुभव कर रहे हैं। भगवान ऋषभ ने अंतःप्रज्ञा को जगाने के अनेक सूत्र हमें दिए हैं। शक्ति के तीन स्रोत—मन, वाणी एवं शरीर हमें प्राप्त है। इन्हें और अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए हम नाना प्रकार के प्रयोग कर सकते हैं। वाणी की शक्ति को संरक्षित करने के लिए साध्वीश्री जी ने डिजिटल फास्टिंग के प्रयोग करते रहने की प्रेरणा दी।

साध्वी योगक्षेमप्रभा जी ने भगवान ऋषभ के जीवन से प्रेरणा ग्रहण कर सबको अक्षय बनने की दिशा में आगे बढ़ने का आह्वान किया।

तेरापंथी श्रद्धालुओं के अतिरिक्त बीच पर योगा करने वाले जैन-अजैन भाई-बहनों ने भी इस उपक्रम के साथ जुड़कर अपने आपमें धन्यता का अनुभव किया। साध्वी मुदितप्रभा जी एवं साध्वी मधुरप्रभा जी ने समवेत स्वर लहरियों से वातावरण को संगीतमय बना दिया। योगा प्रशिक्षक उषाबेन, शांतिलाल गोलेछा, तेरापंथ सभा, मुंबई के मीडिया प्रभारी अनिल परमार, टीपीएफ अध्यक्ष राज सिंघवी आदि विशेष रूप से संभागी बने।

बीदासर

समाधि केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया का कार्यक्रम मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी रचनाश्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में व्यवस्थित रूप से इसका आयोजन वि०सं० २०२६ ऊटी में प्रारंभ हुआ। अक्षय तृतीया का यह पर्व भगवान ऋषभ से जुड़ा हुआ है। भगवान ऋषभ विहरण करते-करते हस्तिनापुर पहुँचे।

बाहुबली के पौत्र श्रेयांस के हाथों आज ही के दिन भगवान का पारणा हुआ। ऋषभ का जन्म यौगलिक युग में हुआ, किंतु वे अतीन्द्रिय चेतना संपन्न प्रतिभाशाली महापुरुष थे। विलक्षण नेतृत्व, विशिष्ट कर्तृत्व से लोगों को जीने की कला सिखाई।

भगवान ऋषभ ने जहाँ समाज की संरचना की वहीं उन्होंने धर्म युग का प्रवर्तन भी किया। तप, त्याग और संयम की प्रेरणा दी। अक्षय तृतीया—इच्छाओं के अल्पीकरण का संदेश देता है। संयम की उदात्त चेतना को विकसित करने का महापर्व है—अक्षय तृतीया। कर्म युग, धर्म युग के अवतरण का पर्व है—अक्षय तृतीया। प्रवृत्ति-निवृत्ति के संतुलन का पर्व है—अक्षय तृतीया।

साध्वी संघप्रभा जी ने ऋषभ शब्द की व्याख्या करते हुए भगवान ऋषभ के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर प्रकाश डाला। शासनश्री साध्वी अमितप्रभा जी ने साध्वी गौरवप्रभा जी और बहन लक्ष्मी देवी बैंगानी के वर्षीतप की अनुमोदना की। साध्वी लब्धियशा जी ने अपनी बहन साध्वी गौरवप्रभा जी के प्रति मंगलकामना व्यक्त की।

महिला मंडल की अध्यक्षा चंदा देवी गिड़िया और अजित बैंगानी ने अपने विचार रखे। नवदीप बैंगानी, साधना देवी बैंगानी और लक्ष्मी देवी बैंगानी के पारिवारिकजनों ने गीत के द्वारा उनके तप की अनुमोदना की। साध्वी गौरवप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में, तप में सहयोगी सभी साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं के प्रति आभार व्यक्त किया। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीत की प्रस्तुति दी। महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया। साध्वी कौशलप्रभा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

अहमदाबाद

तेरापंथी सभा, अहमदाबाद की ओर से शाहीबाग स्थित तेरापंथ भवन में मुनि डॉ० मदन कुमार जी के सान्निध्य में वर्षीतप अनुमोदना का आयोजन किया गया।

मुनि सिद्धार्थ कुमार जी ने गीतिका के संगान के साथ मंगलकारी उत्सव वर्षीतप और अक्षय तृतीया के महत्त्व के बारे में जानकारी दी।

मुनि डॉ० मदन कुमार जी ने अपना प्रेरणादायी उद्बोधन देते हुए भगवान ऋषभ का संक्षिप्त जीवन-वृत्त बताया और तप के महत्त्व को बताते हुए कहा कि वर्षीतप का अर्थ है एक वर्ष के लिए संकल्प करना, तपस्या का लक्ष्य आत्मा की शुद्धि करना, जिससे आत्मा की आराधना हो सकती है।

इस अवसर पर अनेक श्रावकों ने एक साल के लिए विविध संकल्प स्वीकार करके मुनिश्री से प्रत्याख्यान स्वीकार किए।

सभा सहमंत्री जीतेंद्र छाजेड़, तेमम अध्यक्षा चांदबाई छाजेड़ ने तपस्यार्थियों के तप की अनुमोदना करते हुए आध्यात्मिक उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाएँ प्रेषित की।

ऐंजल छाजेड़ व ऋषिका कांकरिया ने अपने-अपने भावों की अभिव्यक्ति के साथ तपस्यार्थी बहनों का परिचय दिया।

एकासन, वर्षीतप आराधिका मंजु देवी, सोहनराज छाजेड़ व देविका, राजेश कांकरिया का सम्मान सभा उपाध्यक्ष कुंदनमल बाफना, कोषाध्यक्ष सुशील बच्छावत, सहमंत्री जितेंद्र छाजेड़, तेमम अध्यक्ष चांददेवी छाजेड़, अणुव्रत समिति अध्यक्ष सुरेश बागरेचा आदि गणमान्य व्यक्तियों द्वारा मोमेंटो, साहित्य व अणुव्रत दुपट्टे से सम्मान किया गया।

तप का अभिनंदन तपस्या करने के भावों के साथ निकिता छाजेड़ व मंजु देवी छाजेड़ द्वारा किया गया। तपस्यार्थी बहनों व परिवार जनों द्वारा मुनिश्री को इक्षुरस का सुपात्र दान दिया गया।

राजसमंद

विशदप्रज्ञा जी के सान्निध्य में राजनगर में तपस्यारत चेष्टा भूपेश धोका वर्षीतप आराधना के उपलक्ष्य में वर्षीतप अनुमोदना कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

तेयुप, राजसमंद के मंत्री अंकित परमार ने बताया कि भिक्षु निलियम में आयोजित इस वर्षीतप अनुमोदना कार्यक्रम की अध्यक्षता भिक्षु बोधि स्थल के कार्यवाहक अध्यक्ष हर्षलाल नवलखा ने की। अनुमोदना कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से की गई। इस अनुमोदना कार्यक्रम में तेमम की बहनों, साध्वी परिवार ने एवं परिवारजनों ने गीतिका के माध्यम से वर्षीतप तपस्वी चेष्टा को शुभकामनाएँ दी और उनके तप की अनुमोदना की।

ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा साध्वी परिवार की प्रेरणा से भगवान ऋषभ देव का श्रेयांस कुमार के हाथों से कैसे पारणा होता है, जीवन झाँकी दर्शाता नाटक प्रस्तुत किया। प्रशिक्षिका निर्मला कोठारी ने नाटक का संयोजन किया। ज्ञानशाला के ही बच्चों ने गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में बोधि स्थल के कार्यवाहक अध्यक्ष हर्षलाल नवलखा, तेयुप, राजसमंद के अध्यक्ष भूपेश धोका, मदनलाल धोका, महेश लोढ़ा, दिया धोका सहित अनेक गणमान्य जनों ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में अंकित परमार, भूपेंद्र मादरेचा, पंकज मादरेचा, हिम्मत सहलोत आदि अनेक गणमान्य महानुभाव इस वर्षीतप अनुमोदना कार्यक्रम उपस्थित हुए।

✦ *इंद्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।*

— आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी का ६२वें जन्म दिवस का आयोजन

मंडिया

तेरापंथी सभा, मंडिया द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी का ६२वाँ जन्म दिवस तेरापंथ भवन में मनाया गया। कार्यक्रम नवकार मंत्र के संगान से शुरू हुआ। मुनि रश्मि कुमार जी ने कहा कि 'म' से महावीर 'म' से महाश्रमण एक तीर्थंकर व दूसरे उनके पट्टधर भगवान महावीर ने अपनी साधना पूर्ण कर ली, आचार्यश्री महाश्रमण उस ओर निरंतर लगे हुए हैं। एक बार आचार्य महाप्रज्ञ जी से प्रश्न किया गया—भंते! महाश्रमण जी को महातपस्वी क्यों कहा? आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने व्याख्या करते हुए फरमाया कि महातपस्वी वह होता है जो आहार संयम करता है। महाश्रमण का आहार संयम अनुत्तर है। महातपस्वी वह होता है, जिसमें इंद्रियाँ संयम होता है। महातपस्वी वह होता है, जो श्रमशील होता है।

आचार्य महाश्रमण का आहार संयम, इंद्रिय संयम, श्रमशीलता, सहनशीलता, अनुत्तर है, बेजोड़ है, इसीलिए आप महातपस्वी महाश्रमण हैं। मुनि प्रियांशु कुमार जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

सभा अध्यक्ष नरेंद्र दक ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम में उपस्थित सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सत्यनारायण गौतम ने अपने विचार रखते हुए मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। मैसूर से समागत कांताबाई नौलखा ने अपने विचार रखे। तेमम द्वारा गीतिका प्रस्तुत की गई। स्थानकवासी समाज से मंत्री विजयराज तलेसरा एवं तेमम अध्यक्षा पुष्पा बाफना, विनोद भंसाली, किशनलाल आच्छा ने अपने विचार व्यक्त किए।

तेयुप अध्यक्ष प्रवीण दक ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता अर्पित करते हुए विचार रखे। जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा द्वारा मुख्य अतिथि सत्यनारायण गौतम का जैन पटके द्वारा अभिनंदन किया गया। मंत्री महावीर भंसाली द्वारा आभार ज्ञापन किया गया।

संत मिलन समारोह का आयोजन

चंडीगढ़।

संत मिलन सौभाग्य का सूचक है। बहुत कठिन होता है, जब दो संतों के ग्रुप का मिलन हो। मुनि विनय कुमार जी लुधियाना से प्रस्थान कर मंडी गोविंदगढ़ पहुँचे और मुनि स्वास्तिक कुमार जी पहले से विराजमान थे। दोनों का आध्यात्मिक मिलन, मंडी गोविंदगढ़ के मैन चौक पर हुआ। मुनिश्री जुलूस के साथ तेरापंथ भवन में पधारे। वहाँ पर आयोजित समारोह में मुनिश्री ने कहा कि मुनि स्वास्तिक कुमार जी कर्मठ और सेवाभावी संत हैं। जहाँ कहीं भी उनका विचरण होता है, उस क्षेत्र की सार-संभाल बहुत अच्छे ढंग से करते हैं। गोविंदगढ़ एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ लोहे की मंडी है और लगता है लोहे की मंडी के नाम से प्रसिद्ध है, पर इस मंडी से सोना उगलता है। हम लोहे को ना देखें, सोने को देखें। हमारा दृष्टिकोण व्यापक बना रहे।

मुनि स्वास्तिक कुमार जी ने कहा कि आज का दिन सौभाग्य का सूचक है कि हमें पुनः मुनिश्री के दर्शन हुए। मुनिश्री मेहनती हैं और सार-संभाल करने में सक्षम हैं। मुनिश्री ने आगे कहा कि श्रावक जितना सजग होगा, समाज उतना ही मजबूत बनेगा। मुनि पार्श्व कुमार जी ने कहा कि जब हम मुनिश्री से मिलते हैं, एक नई चेतना का ऊर्ध्वारोहण होता है। जिंदगी में एक नई मुस्कराहट पैदा होती है। मुनिश्री ने कहा कि अक्षय तृतीया का दिन जैन समाज का गौरवशाली दिन है।

मंच संचालन जोगिंदर पाल गर्ग ने किया। पंजाब सभा के महामंत्री सुनील खुल्लर, मंडी गोविंदगढ़ सभा के मंत्री रजत जैन और तेयुप अध्यक्ष पंकज जैन ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष रमेश मित्तल, विजय सिंगला सहित अनेक सदस्यगण एवं श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे।

दो ज्ञानशाला का शुभारंभ

कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी की प्रेरणा से मुनिश्री के सान्निध्य में एक दक्षिण हावड़ा में संगम ज्ञानशाला एवं दूसरी ज्ञानशाला ओम स्काई लार्क में शुरू हुई।

मुनि जिनेश कुमार जी के अथक परिश्रम से ज्ञानशाला में आने वाले बच्चों में अन्य बच्चों में अंतर की बात अभिभावक के हृदय को स्पर्श कर रही है उसी का परिणाम है कोलकाता स्थान-स्थान पर नई ज्ञानशाला का शुभारंभ।

✦ *आस्तिक विचारधारा का आधार अध्यात्म है, जबकि नास्तिक विचारधारा भौतिकवाद से संपृक्त है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

महिला मंडल द्वारा अनुशासन की शक्ति कार्यशाला का आयोजन

सेलम।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं, सेलम द्वारा साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन में द पावर ऑफ डिसिप्लीन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी दक्षप्रभा जी के सुमधुर मंगलाचरण से हुई। तत्पश्चात महिला मंडल की अध्यक्षा सुनीता बोहरा ने स्वागत भाषण दिया।

डॉ० साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सफल होना चाहता है। विकास व सफलता के अनेक सूत्र हैं, उसमें महत्त्वपूर्ण सूत्र है—अनुशासन। अनुशासन जीवन विकास की खुराक है। यह अहंकार को तोड़ता है, विनम्रता को बढ़ाता है, स्वच्छंदता को मिटाता है, शांत सहवास में सहयोगी बनता है। वर्तमान में कोई किसी के अनुशासन में नहीं रहना चाहता, सबके भीतर स्वतंत्रता की चाह पैदा हो गई है। पर यह अतिस्वतंत्रता स्वच्छंदता का ही दूसरा रूप है।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि अनुशासन का स्वरूप व्यापक है। परानुशासन और आत्मानुशासन—ये इसके दो रूप हैं। जो आत्मानुशासन में रहना सीख जाता है उसे परानुशासन की अपेक्षा नहीं रहती है। साध्वी मेरुप्रभा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया। मंत्री सरिता चोपड़ा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

वर्षीतप करने वाले तपस्वियों का सम्मान समारोह

हैदराबाद।

तेममं के तत्त्वावधान में एवं साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में सुमन विमल दुगड़ के निवास स्थान पर वर्षीतप करने वाले तपस्वियों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि तपस्या करना कर्म निर्जरा का महान उपक्रम है। वर्षीतप करने वाले सभी भाई-बहनों को साधुवाद।

साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी सिद्धियशा जी, साध्वी चैतन्यप्रभा जी, साध्वी राजुलप्रभा जी, साध्वी शौर्यप्रभा जी ने गीतिका द्वारा भावाभिव्यक्ति दी। मंडल की बहनों ने भी आदीश्वर स्तुति दी। नगर में नौ श्रावक-श्राविकाओं एवं साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने वर्षीतप की ज्योत जगाई। वर्षीतप करने वालों में इचु देवी बैद, शर्मिला बैद, सुमन श्यामसुखा, सरोज मुसरफ, सीमा पोकरणा, कपूर चंद दिनेश धारीवाल, महेंद्र लुणावत, भीकमचंद नखत शामिल हैं। मंडल द्वारा तपस्वियों का पचरंगी पटके एवं साहित्य से सम्मान किया गया।

द पावर ऑफ डिसिप्लीन कार्यशाला

अमराईवाडी।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में शिल्पशाला का आयोजन किया गया। जिसका विषय था—'द पावर ऑफ डिसिप्लीन'। कार्यशाला की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के द्वारा साध्वीश्री जी ने की। कन्या मंडल की बहनों के द्वारा मंगलाचरण किया गया। मंडल की अध्यक्षा संगीता सिंघवी ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सभी का स्वागत किया।

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने कहा कि जीवन में अनुशासन का बड़ा महत्त्व है और जो व्यक्ति अनुशासित होता है वही सफलता के शिखर पर आगे बढ़ सकता है। जो व्यक्ति स्वयं अनुशासित होता है, वही व्यक्ति दूसरों पर अनुशासन कर सकता है। जब अपना अनुशासन होगा तो ही बड़ों से भी वात्सल्य मिलता है। इसलिए अनुशासन को जीवन में बनाए रखें, हर परिस्थिति में अनुशासित रहें।

साध्वी संवेगप्रभा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ का प्राण है—अनुशासन। आचार्यों का एक संबोधन है—अनुशासन। तेरापंथ धर्मसंघ की डोर एक आचार्य के हाथ में है और वह डोर है—अनुशासन की। उसी डोर के अनुशासन के आधार पर पूरा धर्मसंघ चल रहा है।

साध्वी तरुणप्रभा जी ने कहा कि अनुशासन क्या है? अनुशासन है बड़ा, जीवन का आधार। जीवन की अंधियारी राहों में प्रकाश पुंज है—अनुशासन। जिस व्यक्ति का स्वयं के प्रति अनुशासन होता है वह सफल और खुशहाल जीवन जी सकता है। वही व्यक्ति विकास कर पाता है। तेरापंथ धर्मसंघ अनुशासित मर्यादित एवं प्राणवान संघ है। इस संघ से हम प्रेरणा लें और अपने जीवन को सफल बनाएँ।

उपासिका मंजू गेलड़ा एवं अहमदाबाद सभा की सहमंत्री लाडदेवी बाफना ने भी अपने विचार रखे। कार्यशाला का संचालन मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया ने किया एवं आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष नीरू सिंघवी ने किया। कन्या मंडल और महिला मंडल की उपस्थिति रही।

कोयंबटूर।

अभातेममं के निर्देशन में प्रथम चरण में द पावन ऑफ डिसिप्लीन कार्यशाला का आयोजन किया। दूसरे चरण में कुसुम बुच्चा द्वारा रैकी सुजोक और स्वास्थ्य के बारे में एक वर्कशॉप रखी गई। इस कार्यशाला का मंगलाचरण मधु चोरड़िया, सुमन सुराणा व ममता पुगलिया द्वारा किया गया। मंडल गीत का संगान दीपिका बोथरा व ज्योति बुरड़ द्वारा किया गया। अध्यक्ष मंजू गिड़िया ने आगंतुकों का स्वागत किया। कार्यशाला के विषय अनुशासन पर निशा रांका ने कहा कि अनुशासन में रहकर लक्षित मंजिल पा सकते हैं। अध्यक्ष मंजू गिड़िया ने तत्त्व प्रचेता कुसुम बुच्चा का सम्मान किया।

दूसरे चरण में कुसुम बुच्चा द्वारा स्वास्थ्य संबंधित जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम में महिला मंडल की बहनों द्वारा गेम्स का आयोजन भी किया गया। गेम्स का आयोजन मधु चोरड़िया व सुमन सुराणा द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का संयोजन कन्या मंडल प्रभारी ममता पुगलिया ने किया। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री आरती रांका ने किया। कार्यक्रम में कुल ३० बहनें उपस्थित रहीं।

साहूकारपेट, चेन्नई।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं, चेन्नई के तत्त्वावधान में शिल्पशाला कार्यक्रम के अंतर्गत अनुशासन की शक्ति विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान हुआ। अध्यक्ष पुष्पा हिरण ने उपस्थित सभी बहनों का स्वागत किया एवं श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया।

कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में राजश्री डागा को आमंत्रित किया गया। उन्होंने बताया कि स्वयं अनुशासित कैसे बनें। स्वयं की कमजोरियाँ एवं अच्छाइयाँ कौन सी हैं, उसे ढूँढ़ें एवं अनुशासन के दो पहलू स्व अनुशासन एवं परानुशासन पर उदाहरण एवं घटनाओं के माध्यम से वक्तव्य प्रस्तुत किया। महिला मंडल की ओर से मुख्य वक्ता का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री रीमा सिंघवी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सहमंत्री कंचन भंडारी ने किया।

आरआर नगर।

तेममं द्वारा पावर ऑफ डिसिप्लीन शिल्पशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का प्रारंभ संरक्षिका सुशीलाबाई छाजेड़ के द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। महिला मंडल की बहनों द्वारा महाश्रमण अष्टकम् के द्वारा मंगलाचरण किया गया। सभी का स्वागत वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुमन पटावरी ने किया। उन्होंने कहा कि अनुशासन ऐसी शक्ति है जो आपके सभी सपनों को पूरा कर सकती है।

मुख्य वक्ता के रूप में रहे प्रवक्ता उपासिका कंचन छाजेड़। उन्होंने अपने भाव व्यक्त किए। कहानी, मुक्तक के द्वारा अनुशासन की बात बताई। तेरापंथ धर्मसंघ एवं पूर्व आचार्य की अनुशासन के जीवंत उदाहरण रखे। कार्यशाला में उपाध्यक्ष शोभा बोथरा, पूर्व अध्यक्ष सरोज बैद आदि बहनें उपस्थित रहीं। आभार ममता दुगड़ ने किया। संचालन वंदना भंसाली ने किया।

'उर्वी मुखरित दीवारें' कार्यक्रम का आयोजन

बैंगलुरु।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में तेरापंथ कन्या मंडल, आर०आर०नगर द्वारा उर्वी मुखरित दीवारें प्रोजेक्ट में अपना हुनर दर्शाया।

उर्वी प्रोजेक्ट के तहत गवर्नमेंट हॉस्पिटल बंगारप्पा के कैंपस के बाहर की तरफ दीवारों पर ग्रीन इंडिया विषय पर सुंदर कलाकृतियाँ बनाई। जिसे हॉस्पिटल के डॉक्टरों, स्टाफ एवं आने-जाने वाले व्यक्तियों द्वारा सराहा गया। कन्याओं द्वारा १५० स्क्वायर फिट दीवार पर भारतीय कला सौंदर्य के साथ-साथ ग्रीन इंडिया का संदेश दर्शाया गया।

इसके अनावरण महिला मंडल अध्यक्ष लता बाफना, सहमंत्री मंजू बोथरा, कन्या मंडल प्रभारी सुधा दुगड़, सहप्रभारी पूनम दुगड़, सरोज सेठिया के द्वारा किया गया। कन्या मंडल सह-संयोजिका आर्या संचेती, भूमिका बोथरा, महक बैद, आंचल बाफना, चेतना संचेती, रीत मेहर तनिष्का ने विशेष रूप से समय एवं श्रम नियोजन कर कलाकृतियों को बनाया।

उम्मीद एक बेहतर कल की कार्यशाला

जसोल।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा सोहनीदेवी सालेचा की अध्यक्षता में 'उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यशाला का आयोजन स्थानीय नवकार विद्या मंदिर, जसोल में किया गया।

सहमंत्री सुमन कोठारी ने स्कूली बच्चों को सामूहिक नमस्कार महामंत्र के बाद महाप्राण ध्वनि के प्रयोग करवाए। महिला मंडल अध्यक्ष सोहनी देवी सालेचा ने ईमानदारी पर महात्मा गांधी के जीवन के किस्से सुनाते हुए कहा कि हमें भी अपने जीवन में अपनी पढ़ाई, अपने कार्यों, पैसे के हिसाब में हमेशा ईमानदार होना चाहिए।

प्रचार-प्रसार मंत्री हेमा बागमार ने व्यक्तिगत स्वच्छता के बारे में बताते हुए कहा कि हमें अपने नाखून, बाल, स्कूल यूनिफार्म, स्कूल बैग, दाँत आदि की सफाई समय-समय पर करनी चाहिए। चंदा चोपड़ा ने कार्यशाला में अनुप्रेक्षा के प्रयोग करवाए। स्कूल के प्रिंसिपल मैडम किरण कोठारी ने तेरापंथ महिला मंडल, जसोल का आभार जताया साथ ही धन्यवाद ज्ञापित किया।

शिल्पशाला का आयोजन

भीलवाड़ा।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं, भीलवाड़ा द्वारा अणुव्रत साधना सदन स्कूल में शासनश्री मुनि हर्षलाल जी के सान्निध्य में अनुशासन की शक्ति विषय पर कार्यशाला का आगाज नवकार महामंत्र उच्चारण के साथ हुआ। शासनश्री मुनि हर्षलाल जी ने अनुशासन पर राष्ट्रसंत आचार्य तुलसी का उदाहरण दिया और बताया कि अनुशासन जीवन विकास की आधारशिला है। व्यक्ति आत्म अनुशासन द्वारा स्वयं को संयमित करने का प्रयास करे।

मुनि यशवंत कुमार जी ने प्रकृति के नियम के साथ ही समाज या संस्था को सुव्यवस्थित चलने के लिए मानवीय नियम जरूरी बताए। मुनि मोक्ष कुमार जी ने कहा कि अनुशासन का अर्थ होता है स्व पर नियंत्रण। अनुशासन में रहते हुए अपने संस्कारों को सींचना है और अपने जीवन को महकाना है।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि विट्टी इंटरनेशनल स्कूल की प्रिंसिपल आभा मित्तल ने बताया कि हम स्कूल में बच्चों को संस्कारित करने के लिए बहुत कुछ कर रहे हैं। पावर ऑफ डिसिप्लीन अर्थात् अच्छे नियमों का अनुसरण करना।

अभातेममं सहमंत्री नीतू ओस्तवाल ने बताया कि वर्ल्ड के जितने सफल व्यक्ति हैं, सबकी सफलता का आधार अनुशासन की शक्ति ही है। इसलिए उन्नत जीवन जीने के लिए अनुशासन जरूरी है। तेममं अध्यक्षा मीना बाबेल ने समागत अतिथि एवं धर्मसभा का स्वागत, अभिनंदन करते हुए बताया कि अनुशासन की शक्ति जीवन के हर क्षेत्र में उपयोगी है। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत द्वारा मंगलाचरण किया।

मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि हिंसा मुक्त जीवन पर कन्या मंडल ने बहुत सुंदर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में सभा मंत्री योगेश चंडालिया, तेयुप अध्यक्ष कमलेश सिरोहिया, मंत्री राजू कर्णावट, टीपीएफ अध्यक्ष करणसिंह सिंघवी, अणुव्रत समिति अध्यक्षा आनंदबाला टोडरवाल, महाप्रज्ञ स्कूल के डायरेक्टर मदनलाल टोडरवाल, प्रिंसिपल दीपा पेशवानी सभी की उपस्थिति रही।

महिला मंडल कार्यकारिणी टीम, संरक्षक, परामर्शक, वरिष्ठ एवं मंडल की सक्रिय जागरूक बहनों की उपस्थिति से आज की शिल्पशाला सफल हुई। मुख्य अतिथि एवं महाप्रज्ञ स्कूल की प्रिंसिपल का संस्था पदाधिकारीगण एवं संस्कार निर्माण प्रोजेक्ट की संयोजिका एवं सहयोगी टीम का मंचासीन अतिथियों द्वारा सम्मान किया गया। कार्यशाला का संचालन विनीता सुतरिया ने किया। आभार मंत्री रेणु चोरड़िया ने किया।

'महाश्रमणं नमाम्यहम' कार्यक्रम का आयोजन

उदयपुर।

तेरापंथी सभा, उदयपुर द्वारा शासनश्री मुनि सुरेश कुमार जी 'हरनावा' के सान्निध्य एवं मुनि संबोधकुमार जी 'मेधांश' के निर्देशन में आचार्यश्री महाश्रमण जी के ६२वें जन्म दिवस, ५०वें दीक्षा कल्याण दिवस व १४वें पदाभिषेक दिवस पर आठ दिवसीय दीक्षा कल्याण महोत्सव 'महाश्रमणं नमाम्यहम' के माध्यम से अभिवंदना की गई।

आठ दिवसीय समारोह में मुख्य संयोजक सुबोध दुगड़ ने बताया कि समूह गान प्रतियोगिता के माध्यम से समारोह की शुरुआत हुई। जिसमें ३ से ५ प्रतिभागियों के १० समूह (४० प्रतिभागियों) ने भाग लिया। प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में चैतन्य भट्ट, अशोक राव एवं श्रेया पालीवाल थे। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हनी पोरवाल, खुशबू कोठारी, अंकिता जैन, निकिता कोठारी का रहा। द्वितीय स्थान जगत दुगड़, बजरंग श्यामसुखा, अशोक डोसी, सुरेंद्र कोठारी तथा तृतीय स्थान दीपक मेहता, करिश्मा मेहता, प्रेक्षा बोहरा का रहा। प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि समाजसेवी अभय कोठारी थे। संचालन पंकज भंडारी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी की ऐतिहासिक उपलब्धियों पर 'आलेख प्रतियोगिता' आयोजित की गई। जिसमें प्रथम स्थान सपना बुलिया, द्वितीय स्थान शुभी धाकड़, तृतीय स्थान ऋद्धि जैन एवं सांत्वना स्थान सुधीर मेहनोत ने प्राप्त किया। प्रतियोगिता के संयोजक तुक्तक भाणावत थे।

शांतिदूत चित्रांकन प्रतियोगिता जिसमें एक घंटे की समय सीमा में आचार्यश्री महाश्रमण जी का चित्र बनाना था। इसमें सीनियर ग्रुप में प्रथम अर्पिता बाबेल, द्वितीय मेघा खाब्या एवं तृतीय स्थान पर प्रीति जैन रही। वहीं जूनियर ग्रुप में जसवी जैन प्रथम, रैनी डांगी द्वितीय तथा भव्या डांगी तृतीय स्थान पर रही। प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका में दिनेश कोठारी, बेला जैन एवं रश्मि पगारिया थे। प्रतियोगिता संयोजिका नेहा चपलोत एवं नमिता कोठारी थे।

महिला संगोष्ठी के माध्यम से नारी शक्ति ने 'ऐसा हो अनुशास्ता का अनुशासन' विषय पर वक्तव्य प्रस्तुत किए। आचार्यश्री महाश्रमण जी के व्यक्तित्व-कर्तृत्व पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित हुई। प्रतियोगिता में डॉ० स्नेहा बाबेल प्रथम, पुष्पा नांदरेचा द्वितीय तथा मोनिका कोठारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक डॉ० एन०के० जैन, अनिता भाणावत, रेणु मोगरा रहे। संचालन आलोक पगारिया ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के ५०वें दीक्षा कल्याणक शुभारंभ पर समूह गान के माध्यम से गुरुदेव की अभिवंदना की। शासनश्री मुनि सुरेश कुमार जी ने कहा कि आचार्य महाश्रमण पुण्य के शिखर पुरुष हैं। आपने गीतिका के माध्यम से आचार्यश्री के चिरायु होने की शुभाशंषा की। मुनि संबोध कुमार जी 'मेधांश' ने कहा कि आचार्यश्री अपनी सहजता, करुणा, कमिटमेंट से सर्वोच्च आध्यात्मिक नेता हैं। समारोह में मुख्य अतिथि अपर जिला न्यायाधीश, सचिव जिला विधि प्राधिकरण कुलदीप शर्मा एवं मुख्य वक्ता संस्था शिरोमणि आंचलिक प्रभारी मेवाड़ धीरेंद्र मेहता थे। महासभा कार्यकारिणी सदस्य महेंद्र सिंघवी उपस्थित रहे। रेखा जैन ने गुरु अभिवंदना गीत प्रस्तुत किया। अभिवंदना के क्रम में सभाध्यक्ष अर्जुन खोखावत, तेयुप अध्यक्ष अक्षय बड़ाला, महिला मंडल अध्यक्षा सीमा पोरवाल ने गुरु अभ्यर्थना की। समारोह का संचालन मुख्य संयोजक सुबोध दुगड़ ने किया। आभार व्यक्त सभा मंत्री विनोद कच्छारा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सभा कोषाध्यक्ष भगवती सुराणा ने ज्ञापित किया। समारोह में आठ दिनों के विजेता प्रतिभागियों को पारितोषिक वितरित किए गए।

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव

गुवाहाटी।

तेरापंथी सभा द्वारा संचालित ज्ञानशाला के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र से किया गया। मंगलाचरण ज्ञानार्थियों के द्वारा किया गया। सभा के मंत्री रायचंद पटावरी, कोषाध्यक्ष उम्मेद कुमार सेठिया, ज्ञानशाला संयोजक आशीष कोचर, मुख्य प्रशिक्षिका कांता बच्छावत, ज्ञानशाला के आर्थिक सौजन्यकर्ता बिमला कोचर एवं वरिष्ठ प्रशिक्षिका स्नेहलता सेठिया को मंचासीन करवाया गया।

मुख्य प्रशिक्षिका कांता बच्छावत ने सभी का स्वागत-अभिनंदन किया। आशीष कोचर ने ज्ञानशाला के बच्चों की बढ़ोतरी का आह्वान किया। वर्ष भर के कार्यों का संकलन रिपोर्ट के रूप में प्रशिक्षिका विजयलक्ष्मी पुगलिया एवं ललिता मालू ने प्रस्तुति किया।

मुख्य प्रशिक्षिका जया घिया की देखरेख में सभी प्रशिक्षिकाओं ने बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ दी। जिसके तहत प्रशिक्षिका संगीता बैद एवं सह-संयोजिका ममता पुगलिया ने समय पर नाटक का मंचन किया।

इस अवसर पर ज्ञानशाला प्रायोजक बिमला कोचर का फुलाम गमछा से सम्मान किया गया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी, जिन्होंने स्कूलों में रैंक प्राप्त किया है, उनका सम्मान सभा के द्वारा किया गया। श्रेष्ठ ज्ञानार्थी कृतज्ञ बैद तथा उत्तम ज्ञानार्थी उदित नौलखा, रोशनी बोथरा, एकता भंसाली का सम्मान किया गया।

सभा के अध्यक्ष बजरंग कुमार सुराणा एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष बाबूलाल सुराणा ने कार्यक्रम की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन एकता बोथरा व विजयलक्ष्मी पुगलिया ने किया। धन्यवाद ज्ञापन ममता पुगलिया ने किया।

मंगल प्रवेश

गुवाहाटी।

साध्वी स्वर्णरेखाजी, साध्वी स्वस्तिकाश्री जी, साध्वी सुधांशुप्रभा जी एवं साध्वी गौतमयशा जी ने पश्चिम बंगाल के बारोबिसा से विहार कर श्रीरामपुर की पावन धरा पर मंगल प्रवेश किया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी के अध्यक्ष बजरंग कुमार सुराणा, उपाध्यक्ष बाबूलाल सुराणा, गुवाहाटी के साथ लगभग १५ क्षेत्रों के संघीय संस्थाओं के सदस्यगण, श्रावक-श्राविकागण उपस्थित थे।

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में गुवाहाटी सभा अध्यक्ष बजरंग कुमार सुराणा ने साध्वीवृंद का आगामी चातुर्मास गुवाहाटी फरमाने पर पूज्य गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं साध्वीवृंद का असम की धरा पर पधारने पर स्वागत अभिनंदन किया। अन्य पधारे हुए महानुभावों ने भी अपने वक्तव्य में साध्वीवृंद का असम धरा पर स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन गुवाहाटी सभा के कार्यकारिणी सदस्य निलेश पगारिया ने किया।

तेयुप द्वारा सेवा कार्य

चाड़वास।

तेयुप, चाड़वास ने राकेश बैद की प्रेरणा से सेठ जुहारमल सेठिया राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चाड़वास में एक कलर प्रिंटर भेंट किया। जिसमें तेयुप के सहयोगी साथी विदेश सुराणा, तेरापंथ सभा, चाड़वास से, मंगलचंद दुगड़, बजरंग लाल दुगड़, प्रेमसुख बच्छावत भी उपस्थित रहे।

विद्यालय के प्रधानाचार्य सुशीला चौधरी, उप-प्राचार्य योगेश टेलर, फूल सिंह मीणा, पिथाराम भार्गव, लूणकरण भार्गव आदि ने समस्त विद्यालय परिवार की ओर से परिषद एवं सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

नमस्कार महामंत्र अनुष्ठान संपन्न

सॉल्टलेक कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में नमस्कार महामंत्र अनुष्ठान एवं प्रवचन कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथी सभा, सॉल्टलेक द्वारा आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जैन धर्म का सुप्रसिद्ध महामंत्र है—नमस्कार महामंत्र। नमस्कार महामंत्र चैतन्य जागरण और चित्त की निर्मलता को विकसित करने वाला अलौकिक मंत्र है। यह बोधि, समाधि और सिद्धि दाता है। यह सब पापों को नाश करने वाला महामंत्र है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि नमस्कार महामंत्र जिन शासन का सार व १४ पूर्वों का उद्धार करने वाला है। जिसका मन नवकार मंत्र में लगा हुआ है उसका कोई भी अनिष्ट नहीं कर सकता।

मुनिश्री ने आगे कहा कि यह मंत्र नहीं महामंत्र है, क्योंकि यह आत्मा का जागरण करता है। जैसे कमल के विकास में सूर्य निमित्त होता है, वैसे ही आत्मा के विकास में नवकार निमित्त होता है। उच्चारण एकाग्रता शुद्धि, भावार्थ स्थान, समय गुरुकृपा आदि जप साधना में जरूरी है। जप साधना से आत्म शुद्धि निर्मलता, पवित्रता बढ़ती है।

मुनि जिनेश कुमार जी ने नमस्कार महामंत्र, बीज मंत्र एवं उनसे जुड़े मंत्रों का जप एवं अनुष्ठान करवाया। बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया। सॉल्टलेक क्षेत्र की एक्टिव ऐंकर ज्ञानशाला एवं राजरहाट ज्ञानशाला ने नमस्कार महामंत्र पर लघु परिसंवाद प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। इस अवसर पर अच्छी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित थे।

सद्-संस्कार कार्यशाला का आयोजन

कावड़ीगुड़ा।

कावड़ीगुड़ा क्षेत्र के नेकलेस प्राईड सोसायटी में श्रावक संभाल हित जागरण यात्रा के साथ साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि हर अभिभावक अपनी भावी पीढ़ी के विकास के प्रति जागरूक है। सभी में कैरियर बनाने की होड़ सी लगी हुई है। पर इस ओर भी ध्यान देना चाहिए कि बच्चे सद्-संस्कार कितने पा रहे हैं। क्योंकि अच्छे संस्कार ही वर्तमान को सजाते हैं और शुभ भविष्य का निर्माण करते हैं।

साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि धन सब कुछ नहीं होता। विचार करें हमारी जिंदगी सद्-संस्कारों से पूर्ण होनी चाहिए। जिंदगी के हर मोड़ पर धर्म का प्रलंब सहारा होना चाहिए। प्रासंगिक प्रेरणास्पद कथानक का श्रवण करवाते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि जो करना है उसके लिए ज्यादा प्रतीक्षा न करें। परिषद् इस तथ्य को समझें, समय प्रबंधन करना सीखें। प्रति घंटे अपने लिए २ मिनट निकालने का प्रयास करें।

महिला मंडल की ओर से साध्वीवृंद के शुभागमन पर स्वागत स्वर प्रस्तुत किए गए। टीपीएफ के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य ऋषभ दुगड़ ने अपने क्षेत्र में साध्वियों का स्वागत करते हुए कहा कि इस बार पूज्य गुरुदेव की महती अनुकंपा से प्रबुद्ध साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी का प्रभावकारी चातुर्मास हमें प्राप्त हुआ है। साध्वीश्री जी ने ऐतिहासिक अक्षय तृतीया का शुभ अवसर हम कावाड़ीगुड़ा वासियों को प्रदान किया है। मैं साध्वीश्री जी के प्रति, हेबिटेट एलाइट अपार्टमेंट एवं नेकलेस प्राईड वासियों की ओर से हार्दिक आभार ज्ञापित करता हूँ।

जैन साध्वियों का आध्यात्मिक मिलन

अमरनगर।

साध्वी प्रमोदश्री जी, साध्वी कुंदनप्रभा जी आदि व साध्वी प्रांजलप्रभा जी का आध्यात्मिक मिलन हुआ।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने सहवर्ती साध्वियों के साथ जैन एन्क्लेव सोसायटी, गंगाना फांटा, पाल गाँव से तेयुप, सरदारपुरा के सदस्यों के साथ मंगल विहार किया।

पैदल विहार करते हुए साध्वीश्री तेरापंथ भवन, अमरनगर पधारे। जहाँ विराजित साध्वी प्रमोदश्री जी, साध्वी कुंदनप्रभा जी आदि साध्वियों से सौहार्दपूर्ण मिलन हुआ। आध्यात्मिक मिलन के इस त्रिवेणी संगम को देखकर उपस्थित श्रावक समाज का रोम-रोम आनंदित हो गया।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा, सरदारपुरा, तेयुप, महिला मंडल के सदस्यों की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
22 - 28 मई, 2023

✦ *उपदेश सुनने की भावना भी अच्छी बात है। उपदेश की सौ बातें सुनी जाएँगी तो उसमें से दो-चार बातें जीवन में हृदयंगम भी हो सकती हैं, उतर भी सकती हैं।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमणजी का जन्मोत्सव एवं पटोत्सव कार्यक्रम के आयोजन

बीदासर

साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण जी का ६२वाँ जन्मोत्सव मनाया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि दो प्रकार के जीवों की चर्चा होती है–सिद्ध और संसारी। सभी कर्मों को क्षय कर मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं, वे सिद्ध कहलाते हैं। लेकिन जो संसारी हैं वह जन्म-मरण करता है। आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सरदारशहर में जन्म लिया इसलिए वे संसारी हैं। किंतु उन्होंने अपने जन्म को तेजस्वी, वर्चस्वी और यशस्वी बना दिया।

शासनश्री साध्वी साधनाश्री जी ने आचार्यश्री महाश्रमण जी के आकर्षक व्यक्तित्व को बताते हुए कहा कि वे पुरुषार्थी और भाग्यशाली हैं, इसीलिए उन्हें सफलता के मोती पग-पग पर मिले जा रहे हैं। महिला मंडल की अध्यक्षा चंदा देवी गिड़िया, सभा की ओर से रवि सेखानी, आशा देवी गिड़िया ने अपने विचार रखे। साध्वी विमलप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वीवृंद ने गीत के माध्यम से अपने आराध्य की अभ्यर्थना की। अणुव्रत समिति के मंत्री नवदीप बैंगानी, रूपम बैंगानी ने गीत की प्रस्तुति दी। साध्वीद्वय ने महाश्रमण अष्टकम् से मंगलाचरण किया। साध्वी लब्धियशा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

● समाधि केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण जी का पट्टोत्सव मनाया गया। साध्वी रचनाश्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक प्राणवान धर्मसंघ है। क्योंकि इस संघ ने तेजस्वी आचार्य परंपरा को प्राप्त किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी समता, ममता और क्षमता से ओतप्रोत हैं। तभी आचार्यश्री तुलसी की पैनी नजर मुनि मदित पर टिकी। आचार्यश्री का समय प्रबंधन और स्मृति प्रबंधन आज के युगीन प्रबंधन गुरु कहलाने वालों के लिए एक चुनौती है। ऐसे विलक्षण प्रतिभाशाली आचार्य के नेतृत्व में हम केवल्य की ओर प्रस्थान करते रहें। साध्वी सन्मजीश्री जी, साध्वी नयश्री जी, साध्वी ऋजुप्रभा जी ने अपने विचार रखे।

शासनश्री साध्वी मदनश्री जी ने गीत के माध्यम से अपने आराध्य की अभ्यर्थना की। कन्या मंडल की संयोजिका गरिमा बोथरा, सुमन सेठिया, सभा की ओर से रवि सेखानी ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कौशलप्रभा जी ने किया।

सॉल्टलेक, कोलकाता

आचार्यश्री महाश्रमण जी के ६२वें जन्म दिवस पर अभिवंदना समारोह मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में हुआ। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि जीवन दर्शन का प्राण तत्त्व है–आचार, विचार और व्यवहार। इसकी श्रेष्ठता व्यक्तित्व को शिखर सी ऊँचाई देती है, समुद्र सी गहराई देती है और आकाश सी व्यापकता देती है। आचार्यश्री महाश्रमण जी का व्यक्तित्व शिखर सी ऊँचाई, सागर सी गहराई व व्योम सी व्यापकता लिए हुए है। आचार्यश्री महाश्रमण जी का जीवन बहुआयामी है। वे प्रकृति से सहज, सरल, शांत व विनम्र हैं।

मुनि जिनेश कुमार जी ने आगे कहा कि जन्म दिवस जोड़ने व प्रकाश फैलाने का पर्व है। इस अवसर पर बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने अभिवंदना गीत प्रस्तुत किया। तेमम, पूर्वांचल ने अभिवंदना गीत की प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर महासभा के मुख्य न्यासी सुरेश गोयल ने भावपूर्ण विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर तेरापंथी सभा, कोलकाता के अध्यक्ष अजय भंसाली सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। ईश्वरी प्रसाद टांटिया का सभा द्वारा सम्मान किया गया।

राजाजीनगर

तेयुप, राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम में आचार्यश्री महाश्रमण जी के ६२वें जन्म दिवस के अवसर पर अभ्यर्थना व्यक्त करते हुए विभिन्न रक्त जाँच रियायती दर पर आयोजित किए गए, जिसमें संपूर्ण रक्त जाँच, किडनी, लीवर, लिपिड, थाइरोइड, ईसीजी, एलेक्ट्रोलयट्स से संबंधित लगभग ३७ जाँचें की गई।

शिविर की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई। तेयुप सदस्यों ने स्थानीय लोगों को एटीडीसी द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवाओं से अवगत कराया। इस शिविर में कुल १०७ सदस्यों ने लाभ लिया।

इस अवसर पर तेयुप के अध्यक्ष अरविंद गन्ना, मंत्री कमलेश चोरड़िया, राजेश देरासरिया, अजय भंडारी, मुकेश भंडारी एवं हरीश पोरवाड़ ने अपनी सेवाएँ प्रदान की।

अक्षय तृतीया महोत्सव एवं तप अभिनंदन समारोह का आयोजन

मंडिया।

अक्षय तृतीया महोत्सव एवं तप अभिनंदन समारोह का आयोजन तेरापंथी सभा मंडिया के बैनर तले सभा भवन में मनाया गया। कार्यक्रम नमस्कार महामंत्रोच्चारण व ओम ऋषभाय नमः अनुष्ठान से शुरू हुआ।

मुनि रश्मि कुमार जी ने कहा कि अक्षय तृतीया का महान पर्व सर्वमान्य महापर्व है। इस दिन को भारतीय जनता ने बहुत शुभ एवं मुहूर्तराज माना है। इसका इतिहास उतना ही प्राचीन है, जितना कि मानवीय सभ्यता का जैन धर्म के आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभ से इसका प्रमुख संबंध है।

मुनि प्रियांशु कुमार जी ने कहा कि भगवान ऋषभ इतिहास पुरुष हैं, इस दौर में भगवान ऋषभ की तपस्या का संहनन नहीं है, फिर भी उस तपस्या को वर्षीतप एकांतर तप एक महान समर्पण है।

सभा अध्यक्ष नरेंद्र दक ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की और नन्जनगुड श्रीरंगपटनम, मैसूर हेच०डी० कोटे, बैंगलोर, हुणसुर से पधारे मेहमानों का स्वागत अभिनंदन करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। नन्जनगुड से पधारी बहनों ने गीतिका प्रस्तुत की। तेयुप अध्यक्ष प्रवीण दक ने भी मुनिवृंद के प्रति कृतज्ञता अर्पित करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में वर्षीतप तपस्वी हेमा सेठिया, नन्जनगुड से पधारे तपस्वी मीना बाई सुखलेचा ने मुनिवृंद को इक्षुरस बहराकर वर्षीतप का समापन किया। तेरापंथ सभा में दोनों तपस्वियों का अभिनंदन पत्र भेंट कर वर्धापन किया।

समारोह में मैसूर, बैंगलुरु, नन्जनगुड, श्रीरंगपटनम्, एचडी कोटे, मंडिया सभा अध्यक्ष नरेंद्र दक, मंत्री महवीर भंसाली, तेयुप अध्यक्ष प्रवीण दक, मंत्री कमलेश गोखरू, महिला मंडल अध्यक्षा पुष्पा बाफना, पूनम बोहरा आदि श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री महावीर भंसाली ने किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १४वें महाप्रयाण दिवस पर कार्यक्रम

दिल्ली।

शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी एवं साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में अणुव्रत भवन में तेरापंथी सभा, दिल्ली के तत्त्वावधान में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १४वाँ महाप्रयाण दिवस मनाया गया। इससे पूर्व दोनों साध्वीवृंद का अणुव्रत भवन में आध्यात्मिक मिलन हुआ।

शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी ने कहा कि अध्यात्म क्षितिज के देदीप्यमान दिनकर आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने अपनी प्रज्ञा की प्रखर लौ से संघ-गगन को तेजोदीप्त कर दिया। उनके प्रज्ञारूपी स्तंभ का सहारा लेकर सैकड़ों संघ-चमन की लताएँ पल्लवित-पुष्पित एवं विकसित हुई जो आज संघ उपवन को सुवासित कर रही हैं। प्रज्ञा के विराट रूप आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी को शत्-शत् नमन।

शासनश्री साध्वीश्री जी ने कहा कि आज हमारे धर्मसंघ की एक प्रबुद्ध एवं प्रभावशाली साध्वी अणिमाश्री जी से हमारा मिलन हुआ है। इन्होंने दक्षिण भारत, पूर्वांचल एवं पश्चिमांचल की प्रभावी यात्राएँ कर संघ की प्रभावना की है।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि अज्ञ से विज्ञ, विज्ञ से प्रज्ञ एवं प्रज्ञ से महाप्रज्ञ बनने की एक सफल यात्रा का नाम है–आचार्य महाप्रज्ञ। कवि, लेखक, वक्ता, संगायक, दार्शनिक, वैज्ञानिक, गणितज्ञ, आगमज्ञ, तत्त्वज्ञ, पंडित, आशुकवि आदि अनेक उपमाओं से उपमित महामानव का नाम है–आचार्य महाप्रज्ञ। उनकी नवोन्मेषी प्रज्ञा ने साहित्य जगत को समृद्ध बनाया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि आज वर्षों बाद शासनश्री के दर्शन पाकर मन आह्लादित एवं प्रफुल्लित है। शासनश्री हमारे धर्मसंघ की अति विशिष्ट साध्वी है। आचार्य तुलसी के युग में इन्होंने प्रबंध निकाय का दायित्व संभालकर अपने प्रबंध कौशल का परिचय दिया है। आपकी लेखनी में दम एवं वाणी में ओज है। आप निरामय रहते हुए साधना करें एवं समाधि का वरण करते रहें। शासनश्री साध्वी शीलप्रभा जी आदि सभी साध्वियों का वात्सल्य मुखरित हो रहा है।

शासनश्री साध्वी शीलप्रभा जी, साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी, साध्वी ओजस्वीप्रभा जी, साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने अपने आराध्य की अभिवंदना में भाव सुमन अर्पित किए। साध्वी समत्वयशा जी एवं साध्वी समाधिप्रभा जी ने अपने सुमधुर स्वरों से स्वरांजलि प्रस्तुत की।

मंच संचालन डॉ० साध्वी सूरजयशा जी ने किया। साध्वीवृंद द्वारा गीत की प्रस्तुति दी।

दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, शाहदरा सभा के अध्यक्ष पन्नालाल बैद, डालमचंद बैद, रमेश कांडपाल, ओसवाल समाज के मंत्री राजेंद्र सिंघी आदि वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए। शाहदरा महिला मंडल ने मंगल संगान प्रस्तुत किया।

प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

कांकरोली, राजसमंद।

मुनि संजय कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में कांकरोली में तीन दिवसीय प्रेक्षाध्यान प्रयोग शिविर का आयोजन किया गया। प्रेक्षा वाहिनी कांकरोली ने शिविर के आयोजन में अहम भूमिका निभाई। मुनि सिद्धप्रज्ञ जी के निर्देशन में ३० से अधिक साधक-साधिकाओं ने भाग लिया। शिविर के दौरान मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने कायोत्सर्ग, चेतन केंद्र प्रेक्षा, शरीर विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान आदि का प्रशिक्षण देते हुए उसके प्रयोग करवाए। मुनिश्री ने कहा कि प्रेक्षाध्यान शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शांति, भावनात्मक संतुलन एवं पारिवारिक सामंजस्य का सर्वोत्तम साधन है।

शिविर समापन के दौरान मुनि प्रसन्न कुमार जी ने कहा कि प्रेक्षाध्यान साधना पद्धति एक प्रामाणिक और समग्रता लिए हुए है। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ जी जैसे योगी पुरुष द्वारा आध्यात्मिक और वैज्ञानिकता का आधार एवं शोधपूर्ण पद्धति है। तीन दिनों में कायोत्सर्ग के प्रयोग एवं ध्यान के विभिन्न प्रयोग कराए तथा मुनि धैर्य कुमार जी ने ध्यान के महत्त्व को बताया।

योग शिक्षक सुरेश बोहरा आदि ने अनुभव सुनाए। प्रेक्षा वाहिनी की संयोजिका मधु चोरड़िया ने मुनिप्रवर का स्वागत करते हुए आभार व्यक्त किया। सभी शिविरार्थियों ने शिविर की मुक्त कंठ से सराहना की।

विजयनगर के पंचम आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का लोकार्पण

विजयनगर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, विजयनगर द्वारा आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं डेंटल केयर का शुभारंभ किया गया। अत्याधुनिक मशीनों से सुशोभित लेबोरेट्री का जैन संस्कार विधि से शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत मुनि दीप कुमार जी एवं मुनि काव्य कुमार जी के मंगलपाठ से हुई।

परिषद अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि तेयुप, विजयनगर द्वारा यह पाँचवाँ डायग्नोस्टिक सेंटर संपूर्ण जनमानस के लिए एक सौगात बनेगा। युवा गौरव बी०सी० भालावत ने कहा कि रियायती दरों पर परीक्षण करने से जरूरतमंदों को जो सहायता होती है वही सच्ची मानव सेवा है और विजयनगर एटीडीसी को उदाहरण के तौर पर लें। अभातेयुप अभूतपूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया ने कहा कि देश भर का यह ७४वाँ और विजयनगर का ५वाँ डायग्नोस्टिक सेंटर है जो विजयनगर की विशिष्टता को दर्शाता है। यह ५०वें एटीडीसी की नींव है। विजयनगर के कार्यकर्ता श्रम और निष्ठा से न केवल आध्यात्मिक कार्य करते हैं, बल्कि सामाजिक कार्यों में भी पूरी रुचि दिखाते हैं।

अभातेयुप निवर्तमान अध्यक्ष संदीप कोठारी ने उपस्थित सभी तेयुप के साथियों को आह्वान करते हुए कहा कि विजयनगर में एक हॉस्पिटल के निर्माण की ओर अग्रसर होना चाहिए। उद्घाटनकर्ता अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा ने तेयुप, विजयनगर के हर एक सदस्य का इस कार्य में लगे श्रम और लगन की सराहना की। एटीडीसी राष्ट्रीय प्रभारी अर्पित नाहर ने विजयनगर की एटीडीसी को भारत की श्रेष्ठ एटीडीसी बताया। उद्घाटन समारोह में विजयनगर सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी ने शुभकामनाएँ प्रेषित की।

तेयुप, विजयनगर के पूर्व अध्यक्ष राकेश दुधोड़िया, अशोक कोठारी, संपत चावत, दिनेश मरोठी, महेंद्र टेबा, महावीर टेबा, अमित दक, बेंगलोर की अन्य परिषद से पधारे पदाधिकारियों ने बधाई संप्रेषित की। पधारे हुए उद्घाटनकर्ता परिवार सभी दानदाताओं, अतिथियों एवं एटीडीसी स्टाफ का सम्मान परिषद परिवार द्वारा किया गया।

उद्घाटन कार्यक्रम में अभातेयुप से तेरापंथ टाइम्स के संपादक दिनेश मरोठी, सीपीएस प्रभारी सतीश पोरवाड़, विनोद मुथा, गौतम खाब्या, अमित दक, अरविंद पोकरणा, अणुविभा के संगठन मंत्री राजेश चावत की विशेष उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के संयोजन में उपाध्यक्ष मनीष चावत, विकास बांठिया, सहमंत्री कमलेश चोपड़ा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों का सहयोग रहा। तेयुप, विजयनगर एटीडीसी के सह-संयोजक अभिषेक कावड़िया ने आभार ज्ञापन किया। संचालन मंत्री राकेश पोखरणा एवं उपाध्यक्ष विकास बांठिया ने किया।

संस्कारक राकेश दुधोड़िया, लाभेश कांसवा, विकास बांठिया, आशीष सिंघी, पवन बैद ने विविध मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को निष्पादित करवाया।

'महाश्रमणोतस्तु मंगलम' कार्यक्रम का आयोजन

रोहिणी, दिल्ली।

साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में एवं तेयुप, दिल्ली के तत्त्वावधान में 'महाश्रमणोतस्तु मंगलम' विषयानुसार आचार्यश्री महाश्रमण जी के ५०वें दीक्षोत्सव के उपलक्ष्य में भक्ति संध्या का आयोजन रखा गया। इस कार्यक्रम में दिल्ली स्तरीय १० गायक-गायिकाओं ने अपनी-अपनी सुमधुर गीतिकाओं द्वारा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

राहुल बैद, राकेश चिंडालिया, शर्मीला बरड़िया, दीपिका छल्लाणी, चारू बांठिया, ईशांत नौलखा, पुलकित खटेड़, प्रवीण बैद, प्रवीण बैंगानी, ललित श्यामसुखा, निष्ठा जैन एवं प्रिया सिंघी आदि ने सुमधुर स्वर लहरियों से आचार्य महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव पर अभिवंदना प्रस्तुत कर दी।

इस अवसर पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जैन शासन के प्राण हैं, त्राण हैं और भैक्षव संघ के ग्यारहवें अधिशास्ता गन की आन-बान और शान हैं। आचार्यप्रवर का इंद्रिय संयम, खाद्य संयम और वाणी संयम अनुत्तर है। साध्वीश्री जी ने कहा कि तेरापंथ की युवा शक्ति दिल्ली देश की राजधानी में अपनी श्रमनिष्ठा, संघनिष्ठा, गुरुनिष्ठा, आज्ञानिष्ठा एवं समर्पण निष्ठा से निरंतर गतिमान है, गतिमान रहे, मंगलकामना।

इस अवसर पर सभी गायकों को पचरंगा उत्तरीय ओढाकर अभिनंदन किया गया। तेयुप, दिल्ली के अध्यक्ष विकास सुराणा ने आचार्यप्रवर के दीर्घ जीवन की मंगलकामना की। तेरापंथी सभा, रोहिणी के अध्यक्ष विजय जैन, महामंत्री राजेंद्र बैंगानी, कोषाध्यक्ष पराग जैन एवं पश्चिम विहार सभा अध्यक्ष सुशील जैन, पीतमपुरा के अध्यक्ष प्रवीण बैंगानी, दिल्ली सभा के मंत्री संजीव जैन, तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष संजय खटेड आदि गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन प्रवीण बैद ने किया तथा आभार ज्ञापन तेयुप दिल्ली के उपाध्यक्ष मुकेश जैन ने किया।

किशोर युवा उत्कर्ष कार्यशाला का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप के तत्त्वावधान में रोहित अपार्टमेंट में किशोर युवा उत्कर्ष कार्यशाला का आयोजन हुआ। जिसमें लगभग ११५ किशोर युवा की उपस्थिति रही। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति उन्नति, विकास, उत्कर्ष चाहता है। उत्कर्ष भौतिक व आध्यात्मिक दोनों होते हैं। संसारी जीवों के दोनों प्रकार के उत्कर्ष की आवश्यकता होती है। भौतिक उत्कर्ष से आध्यात्मिक उत्कर्ष का महत्त्व ज्यादा है।

मुनिश्री ने कहा कि प्रत्येक किशोर व युवा को मांस, मदिरा, परस्त्री गमन से दूर रहना चाहिए। नशा एक सामाजिक बुराई है। व्यक्ति को हमेशा नशे से मुक्त होकर अच्छा जीवन जीना चाहिए।

मुनि परमानंद जी ने कहा कि जिस समाज का युवा जागृत होता है वह समाज शक्तिशाली होता है। कार्यक्रम का शुभारंभ युवाओं के विजय गीत से हुआ। स्वागत भाषण तेयुप के अध्यक्ष राजीव खटेड़ ने किया। मुनि कुणाल कुमार जी ने तेरापंथ प्रबोध का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

एटीडीसी सेंपल कलेक्शन सेंटर का शुभारंभ

जयपुर।

तेयुप, जयपुर के द्वारा गठित ट्रस्ट के अंतर्गत आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के द्वारा जैन संस्कार विधि से सेंपल कलेक्शन सेंटर का शुभारंभ श्री जैन श्वेतांबर संघ, जवाहरनगर, जयपुर के महावीर औषधालय में ट्रस्ट के चेयरमैन सुरेंद्र नाहटा व संस्थापक संरक्षक न्यासी संपत बच्छावत, अभातेयुप संगठन मंत्री श्रेयांस कोठारी की उपस्थिति में संस्कारक राजेंद्र बांठिया व सौरभ जैन ने पूरे विधि-विधान से मंत्रोचार का संगान करते हुए संपन्न करवाया।

सेंटर के संयोजक श्रेयांस बैंगानी ने बताया कि मानव सेवा के इस कार्य के लिए महावीर औषधालय, श्री जैन श्वेतांबर संघ, जवाहरनगर, जयपुर की ओर से सेंपल कलेक्शन सेंटर के लिए निःशुल्क जगह प्रदान की है।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हिम्मत डोसी, मंत्री सुरेंद्र सेखानी, अणुविभा, जयपुर केंद्र के अध्यक्ष पन्नालाल बैद, सेंटर की ट्रस्टी बिमला दुगड़, प्रदीप डोसी, श्रेयांस पारख, तेयुप, जयपुर निवर्तमान अध्यक्ष राजेश छाजेड़ आदि अनेक पदाधिकारीगण, सदस्य एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

तेयुप द्वारा सेवा कार्य

पूर्वांचल-कोलकाता।

तेयुप द्वारा C C Saha Ltd. के साथ मिलकर आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में ३७ जरूरतमंद लोगों का निःशुल्क परीक्षण किया गया।

इस शिविर के प्रायोजक प्रमोद, महेंद्र, नरेंद्र छाजेड़ ने पधारकर शिविर का जायजा लिया और आगे भी सहयोग जारी रखने और निरंतर शिविर के लिए प्रोत्साहित किया। यह शिविर स्वर्गीय उमरावमल छाजेड़ की स्मृति में उनके परिवार द्वारा आयोजित किया गया। संयोजक रोहित धारेवा एवं सह-संयोजक नीरज बैंगानी एवं कार्य समिति सदस्य जिनेश सेठिया के अथक श्रम से शिविर सफल रहा।

मेगा ब्लड टेस्ट कैंप

अमराईवाड़ी।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, अमराईवाड़ी द्वारा मेगा ब्लड टेस्ट कैंप का आयोजन मायरा ज्वेलर्स वस्त्रालय पर किया गया। तेयुप के मंत्री हितेश चपलोत ने नवकार मंत्र से कैंप की शुरुआत की।

कैंप में बेजीक बॉडी प्रोफाइल एवं फुल बॉडी प्रोफाइल के दो पैकेज रखे गए। रेंडम ब्लड सुगर की रिपोर्ट निःशुल्क रखी गई। कैंप के शुभेच्छक के रूप में दिनेश, अशोक, ओमप्रकाश, मुकेश सिंघवी परिवार का पूरा सहयोग रहा। कैंप में २३ सदस्यों ने लाभ लिया।

कैंप में डॉ० खुशबू राजपूत द्वारा फिजियोथैरेपी कंसल्टिंग निःशुल्क रखी गई, जिसमें करीबन २० सदस्यों ने लाभ लिया। कैंप को सफल बनाने में एटीडीसी संयोजक कैलाश बाफना एवं मुकेश सिंघवी तथा पूरी एटीडीसी टीम का विशेष श्रम रहा।

कैंप में सोसियल मीडिया टीम के जयेश सिंघवी एवं विशल सिंघवी का श्रम रहा। समस्त एटीडीसी टीम ने सिंघवी परिवार को शॉल माला से सम्मानित किया। कैंप के सहयोगी करणभाई पुरोहित एवं अल्पेश हिरण का माला द्वारा सम्मान किया गया।

जीवन में हमेशा सत्संगत...

(पृष्ठ १६ का शेष)

साधु की संगत से पता चल सकता है कि तुम अकेले हो। जीवन सारा बदल सकता है। पाप कर्म के बंध से बच सकता है। सत्संगत से पापी भी धर्मी बन सकता है। 'सत्संगत से सुख मिलता है' गीत के पद्यों का सुमधुर संगान करवाया। एकत्व की चेतना से आदमी पाप की प्रवृत्ति से बच सकता है।

आज अष्टगाँव आए हैं। सिद्धों के आठ गुण होते हैं, उनको याद कर उस दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करें।

पूज्यप्रवर के स्वागत में अष्टगाँव की महिलाओं ने गीत प्रस्तुत किया। मंजू, विमला मांडोत एवं नरेश कुमार मांडोत ने अपनी-अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
22 - 28 मई, 2023

✦ चोरी सजीव वस्तु की भी हो सकती है और निर्जीव वस्तु की भी हो सकती है।

—आचार्यश्री महाश्रमण

दुखों से मुक्ति के लिए अध्यात्म साधना करें : आचार्यश्री महाश्रमण

सरघोण, सूरत, १० मई, २०२३

विकास पुरोधा आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ अणुव्रत यात्रा के रूप में सरघोण ग्राम में पधारे। आचार्यप्रवर ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि मनुष्य के जीवन में बुढ़ापा भी शरीर में आ जाता है, बीमारी भी लग जाती है और मृत्यु अवश्यंभावी है।

इस संसार में बुढ़ापा, बीमारी, मृत्यु और जन्म को दुःख कहा गया है। प्रश्न है कि कौन हमें इन दुखों से छुटकारा दिला सकता है। शरणदाता कौन बन सकता है। शास्त्रों में कहा गया है कि तुम्हारे मित्र-परिवार के लोग तुम्हें त्राण और शरण देने वाले नहीं बन सकते और न ही तुम उनको त्राण-शरण देने वाले बन सकते हो। सेवा तो कर सकते हो। औषध की व्यवस्था कर सकते हो पर तकलीफ को दूर नहीं कर सकते। त्राण और शरणदाता तो केवल धर्म ही है।

कर्म करने वाले को अपना कर्म भोगना पड़ता है। अध्यात्म की पृष्ठभूमि में एक बात है—सर्व दुःख मुक्ति। इसे प्राप्त करने के लिए साधना की अपेक्षा रहती है। आत्मा परमात्मा स्वरूप को पा जाए तो सर्व दुःख मुक्ति हो सकती है। एक प्रसंग द्वारा समझाया कि सीधी अंगुली से घी नहीं निकलता। तरीके से समझाकर बात दिमाग में बिठाई जा सकती है। अध्यात्म की साधना, जप, तप, योग आदि के माध्यम से मनुष्य सर्वदुःख मुक्ति की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

जीवन में सद्भावना और मैत्री भाव रखो। किसी से घृणा मत करो। प्राणी मात्र से मैत्री रखो। अहिंसा और मैत्री को सब धर्म मानते हैं। पापी से नहीं, पाप से घृणा करो। मृत्यु तो हर संसारी प्राणी को आने वाली है। धर्म की शरण लें, धर्म के मार्ग पर चलो।

अहिंसा का मार्ग शांति और संयम का मार्ग है। स्वयं पर अनुशासन करें। अणुव्रत के नियमों को तो हर कोई स्वीकार कर सकता है। अणुव्रत अंधकार में प्रकाश करने वाला एक दीया है। साधना से आदमी परमात्मा पद को प्राप्त कर सकता है।

आज सरघोण आए हैं। अनेक संप्रदाय के लोग हैं। सभी में खूब धर्म की जागरणा, सद्भावना, मैत्री का भाव बना रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि व्यक्ति शांति को प्राप्त कर सकता है। जब उसके कषाय मंद हो जाते हैं। क्रोध, मान, माया और लोभ शांति को भंग करने वाले हैं। इनसे व्यक्ति दुखी बन सकता है। हम कषायों को मंद करने का प्रयास करें। परमपूज्यश्री हमें कषायों को कम करने की प्रेरणा देते रहते हैं। क्रोध को उपशम से, अहंकार को मृदुता से, माया को सरलता से और लोभ को संतोष की अनुप्रेक्षा से दूर कर सकते हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में महिला मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। दिलखुश बाफना, प्रदीप भाई पटेल, दिनेश ओस्तवाल ने अपनी-अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर को 'अणुव्रत पत्रिका' का नया संस्करण अणुव्रत परिवार द्वारा उपहृत किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

कथनी-करनी में अंतर ना हो : आचार्यश्री महाश्रमण

चीखली, गुजरात १३ मई, २०२३

अमृत पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि तेरह मई का दिन है, यह दिन मेरे जन्म दिवस के साथ भी जुड़ा हुआ है। ६१ वर्ष पूर्व मैंने जन्म लिया था। जन्म लेना सृष्टि का नियम है।

दुनिया का छोटे से छोटा प्राणी जन्म लेता है। जन्म लेना तो नियति के हाथ में है, पर जीवन जीना भी नियति पर हो सकता है, लेकिन हम पुरुषार्थ करें, नियति पर ही न छोड़ें। 'जीवन मैं कैसे जीऊँ' इस विषय पर आदमी का स्पष्ट चिंतन हो जाए तो एक जीवन की शैली का भी निर्धारण हो सकता है।

दो प्रश्न हैं—जीवन क्यों जीना और कैसे जीना? श्वास तो हर संसारी प्राणी लेता है। जिसके जीवन में धर्म नहीं है, उनके दिन आते हैं, चले जाते हैं। जीवन जीने के अनेक लक्ष्य हो सकते हैं, पर एक परम लक्ष्य है—पूर्व में कृत कर्मों का क्षय करने के लिए शरीर को धारण कर जीवन जीएँ। आत्मा को निर्मल बनाकर मोक्ष प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ें।

ऐसा जीवन जीएँ कि जिससे हम मोक्ष के निकट हो सकें। कर्म करने की साधना करें। साधु सभी बन जाएँ, यह तो कठिन मार्ग है। सरल है—अगार धर्म, अणुव्रत धर्म। गृहस्थ में रहकर भी संवर-निर्जरा की साधना अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों से हो सकती है। जप, स्वाध्याय, ध्यान और निराहार की साधना करें तो पुराने कर्म कट सकते हैं। संयम की साधना से जीवन जीएँ। अहिंसा, संयम और तप की साधना की शैली से जीवन जीएँ।

जीवन में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति रहे। सरलता रहे, कथनी-करनी में अंतर न हो। संयम से स्वयं जीएँ और दूसरों के जीवन में अशांति न पैदा करें। हमें मानव जीवन मिला है, यह विशेष बात है, कारण धर्म की साधना जो मानव कर सकता है, दूसरे नहीं कर सकते।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि सहनशक्ति तीन तरह की होती है—कांच की खिड़की की तरह, काँच की दीवार की तरह और ईंट-सीमेंट की दीवार की तरह, जिनकी सहनशक्ति कमजोर होती है, वो काँच की खिड़की जैसे गेंद के एक प्रहार में टूट जाती है, वैसी होती है। काँच की दीवार कुछ मजबूत होती है, पर ईंट-सीमेंट की दीवार की तरह सहनशक्ति वाला व्यक्ति कभी हारता नहीं है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में महिला मंडल से चंदा चावत ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीवन में हमेशा सत्संगत करें : आचार्यश्री महाश्रमण

अष्टगाँव, सूरत, १२ मई, २०२३

तीर्थंकर के प्रतिनिधि परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी अणुव्रत यात्रा के साथ अष्टगाँव पधारे। परम पावन ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि दुनिया में दो राशियाँ बताई गई हैं—जीव राशि और अजीव राशि। दोनों का इतना मिला-जुला संबंध है कि संसारी अवस्था में जीव हैं, तो अजीव भी हैं। जीव और शरीर दोनों मिले हुए हों तो जीवन की बात हो सकती है।

आत्मा और शरीर इनमें आत्मा मूल तत्त्व है। जो आगे भी रहती है। शरीर तो सहायक तत्त्व है। जीव तो अकेला ही आता है और अकेला ही जाता है। यह एक तथ्य है कि मैं अकेला हूँ। मैं आत्मा हूँ। यह शरीर भी साथ नहीं चलने वाला है।

यह अकेलापन अध्यात्म का बोध कराने वाला है। मैं ही कर्मों का कर्ता व भोक्ता हूँ। दूसरे सहयोग कर सकते हैं, पर जाना तो अकेले ही होगा। पूर्वकृत पुण्य होते हैं, वे आदमी की रक्षा करते हैं। वैराग्य भाव में यह एकत्व भावना अपनी भूमिका अदा कर सकते हैं। अकेलेपन का अनुभव आदमी को पापों से दूर रखने में सहयोगी बन सकता है। यह एक प्रसंग द्वारा समझाया कि पाप का फल तो स्वयं को ही भोगना पड़ता है, कोई साथ नहीं देने वाला है।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**